तर्केइस्लाम

अर्थात्

व्याख्यान

मि० धर्म्मपालजी बी० ए०

भूतपूर्व मु० अब्दुलगफूर बी० ए०

हेडमास्टर इस्लामिया हाई स्कूल गूजरांवाला जो उन्होंने १४ जून सन् १९०३ ई० को गूजरांवाला आर्य्यसमाज मन्दिरमें वैदिकधर्म स्वीकार करते समय दिया था।

मुद्रक और प्रकाशक—

गोविन्दराम वर्मा,

वैदिक प्रेस

८।१ चीनीपट्टी, कलकत्ता।

प्रथमवार १००० | संवत् १९८४ विक्रमी | मूल्य ≡)

कुछ उपयोगी पुस्तकें।

वीर सन्यासी श्रद्धानन्द—१७ चित्रों सहित सजिल्द श्रद्धानन्दजीका विस्तृत जीवनचरित्र मूल्य केवल १=)

बलिदान चित्रावली—धर्म और जाति पर बलिदान हो वाले गुरु तेगबहादुर से लेकर स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज ११ महापुरुषोंके २२ चित्रोंसे युक्त चित्रमय जीवनचरित्र लीथ मूल्य केवल ॥)

आर्य चित्रावली—श्रीमद्दयानन्द चित्रावलीका दूसरा रण जिसमें गुरु विरजानन्द एवं ऋषि दयानन्द से तकके आर्य राजा, विद्वान्, नेता; लेखकादिकोंके ओंके चित्रों सहित अपूर्व चित्रावली ३०० से अधि विभूषित मूल्य केवल २॥)

चित्रमय दयानन्द—स्वामी दयानन्दका चित्रमय जी चरित्र आठशालादिकोंमें उपहार देने योग्य मू० १।)

आर्य पथिक लेखराम—स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज खित पं० लेखरामका पूरा जीवनचरित्र मू० १)

विधवा विवाह—पं० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर प्रणीत बड़ पुस्तक स्मृति पुराणादिकोंके सैकड़ों प्रमाण युक्त अद्वितीय पु मू० १॥)

पतितोंकी शुद्धि शास्त्र सम्मत है मू० ।-)।

मिलनेका पता—

वैदिक पुस्तकालय

८।१ रामकुमार रक्षित लेन, कलकत्ता।

गुरु विरजानन्द दण्डी
ग्रन्थार्थ पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक 5340
दयानन्द ...

तर्के इस्लाम ।

उपस्थित सभ्यगण ! मैं आपको हार्दिक धन्यवाद देता हूं कि आप कतिपय महाशयोंने तो इस नगरसे और कतिपय महानुभावोंने दूर देशस्थ नगरोंसे इस ग्रीश्म ऋतुके कष्टको सहन करके सबको अपने आगमनसे सुशोभित किया है ।

सामान्य धन्यवादके अतिरिक्त मैं साधारणतया आर्य्य-समाजको और विशेषतया गुजरानवाला समाजको बधाई देता और आनन्द हुलास आच्छादित करता हूं, कि वह आज एक श्रेष्ठ और निपट निराले कार्य्यके करनेके अर्थ उद्यत हैं और आस पासके विपक्षी और विप्रलम्भ तथा उलहनोंको किञ्चित ध्यानमें न लाकर एक जन्मके मुसलमान (यवन) को अपने साथ मिला रहा है ।

आर्य्यसमाज गुजरानवालाको मैं और भी आनन्द व हर्षके साथ स्मरण करता हूं कि वह इस कार्यमें असीम दृढ़ रहा यद्यपि विपक्षियोंकी ओरसे आर्यसमाज गुजरानवालाके पास बहुधा पत्र आते रहे कि वह "आस्तीनका सांप" है, इससे बचकर रहना कपटी और विश्वासघाती पुरुष हैं, धोखेमें मत आजाना, यह भेद लेनेके लिये आया है और मुसलमानों (यवनों) की ओर से है ! परन्तु है प्रशंसनीय उनका साहस कि उन्होंने असम्बद्ध प्रलाप करने वालोंका कुछ ध्यान न करके इस कार्यको सब

प्रकार परिणाम तक पहुंचानेकी तत्परता प्रकटकी ! हां जहाँ आर्य समाजके सभासदोंको इस प्रकार असन्तुष्ट करनेका प्रयत्न किया गया, वहां मुझे भी बहुधा मुसलमान लोगोंने आर्य्य-समाजकी ओरसे असन्तुष्ट करनेमें कुछ शेष नहीं छोड़ा। कोई नियोगका विवाद सम्मिलित करने लगा, कोई आवागमनका विषय प्रविष्ठ करने लगा और अन्य बातें सुनाने लगा-और जहाँ तक होसका, अन्य अनर्गल लेखोंसे मेरे अगोंको कंपायमान करना चाहा। परन्तु उन सत्यसे बहिर्मुखोंको यह पता नहीं था कि जब किसीके हृदय पर सचाईकी मोहर अङ्कित हो जाती है तो वह असंगत प्रलाप और आस पासके लोगोंकी आयं बायं शायंसे मिट नहीं सकती है, न उसको लेख दूर कर सकता है, न वाद विवाद, न धमकी, न डर, न तलवार, न कृपाण, न कोई लालसा आदि! सचाई शिरके साथ जाती है। शरीर छेदन किया जा सकता है किंतु उस सत्य विश्वासके चिह्नको हम छेदन नहीं कर सक्ते ! अतएव बड़े धन्यवादका स्थल है कि आज हम निर्विघ्नरूपसे यहां पर एकत्र होकर इस श्रेष्ठरीति (संस्कार) को पूरा कर रहे हैं। जो सचाई केवल (सत्यता सचाईपर निर्भर है जिसकी पैंदीमें न कोई लोभ है, न डर न कोई बहकावट मौजूद है न फुसलावट, न तलवार मौजूद है किंतु सत्यताको ग्रहण करके और सत्यता पर मोहित होकर मैं आज एक मतको छोड़कर दूसरे धर्ममें सम्मिलित होता हूं मैंने यवन मत (मुसलमानी मजहब) को क्यों छोड़ा ? इस प्रश्न का उत्तर प्रत्येक मनुष्य नहीं दे सकता ! सम्भव है कि चा ओर मत (धर्म) परिवर्तनकी घटना सुनकर वह अपने हृदय

कोई उलटा उत्तर प्राप्त करलें और उलटी रीति पर अपने मनमें शांति प्राप्त करले।

तिथि ... 2624

किंतु इनको विश्वास करना चाहिये कि मैंने उन कारणों को लेकर मत परिवर्तन नहीं किया कि जिन कारणों को हम बहुधा अपने आस पासके मत परिवर्तन कर्ताओं के वर्तावमें लाते हुये पाते हैं उदाहरणतया।

(१) बहुत से लोग धन और रुपये के अर्थ मत परिवर्तन कर लेते हैं।

विषय ... 2-0-१६ क-३-६

(२) बहुत से जन किसी रूपवती स्त्री के पीछे धर्म छोड़ बैठते हैं, और बहुधा दृष्टान्त देखे सुने जाते हैं कि अमुक पुरुष अमुक कंचनी के हेतु अमुक होगया इत्यादि २।

(३) बहुत से पुरुष नौकरी व किसी पद के लालच में आकर मत परिवर्तन करते हैं।

(४) बहुत से जन किसी भय से अथवा धमकी से मत परिवर्तन करते हैं। हां अनेक ने तलवार के भय से धर्म परिवर्तन किया है!

(५) अनेक पुरुष किसी मत और सम्राटीय सभा (सुसायटी) का मत केवल इस कारण स्वीकार कर लेते हैं कि सोशल (सभा सम्बन्धी) और पोलेटीकल (राज्यकीय) अधिकार हमें मिल जावेंगे।

(६) बहुत से लोग दूसरे मत में धनी और पढ़े लिखे पुरुषों की एक बहुत बड़ी संख्या देख कर मत परिवर्तन कर लेते हैं।

(७) बहुत से मनुष्य अपनी बिरादरी या मा बाप को धमकाने के लिये किसी अनबन पर मत परिवर्तन कर बैठते हैं।

(८) अनेक जन अपने सहधर्मियों को ओर से कोई चोट खाकर उनको अपने मत परिवर्तन से धमकाने के लिये ही बिना सोचे समझे धर्म परित्याग कर बैठते हैं। और बहुधा धोखे से ही धर्म छोड़ बैठते हैं परन्तु मैंने जो इस्लाम परित्याग किया है वह पूर्वोक्त कारणों में से किसी कारण को ग्रहण करके नहीं किया।

आर्य्यसमाज की ओर से मुझे धन, द्रव्य, स्त्री पद या किसी अन्य अधिकार का लालच नहीं दिया गया और यदि सच पूछो तो आर्य्यसमाजके पास इस प्रकार लालच हो कहाँ है। यदि कल्पना करो कि कोई हो भी तो क्या ऋषियों को सन्तान किसी लालच या धोखेसे एक पुरुषको अपने साथ मिलाकर यह समझ सक्ती है कि हमने धर्म का काम किया? किन्तु महान् अधर्म और महान् पाप का काम है तो फिर क्या आर्य्य समाज ने मुझे बहका लिया! प्रथम तो आर्य्यसमाज का काम कतिपय मतों की सदृश बहकाकर संख्या बढ़ाना कदापि नहीं है कदाचित यदि हम यह कल्पना भी करलें कि आर्य्यसमाज बहका लेता है तो किसको? क्या एक यूनीवरसिटी (विश्व विद्यालय) के डिगरी प्राप्त को, एक हाईस्कूल के हेडमास्टर को, और फिर एक मुसलमान को (ई ख्याल अस्तो मुहाल अस्तो जुनूं?)—ऐसा विचार करना दुस्तर वरन उन्मत्तता है!

आर्य्यसमाजके किसी आदमीने मुझे नहीं बहकाया, आर्य्यसमाजके किसी आदमीने मुझे नहीं खींचा; किंतु उस सत्यताने मुझे आकर्षित किया जो भविष्यमें मेरी समान बहुतोंको खींचेगी, वह सत्यता क्या? वह वैदिक धर्म कि जिसके चिन्ह

मैं यहां अपने आस पास कहीं द्वार और भीतों पर देख रहा हूं! इस सत्यताके जलने मेरे पिपासाकुलित हृदयको आर्दित किया जब कि कुरानके मारुस्थली तट मेरी पिपासाकी शान्ति न कर सके, जब कुरानकी बुद्धि विरुद्ध बातें मेरे डांवाडोल और क्लेशित मस्तकको कुछ संतोष न दे सकीं! कुरानके बहुतसे जंगली और दयारहित प्रकरण मेरे नम्र हृदयको सन्तुष्ट न कर सके जब कुरानकी नीच कक्षाकी शिक्षा मेरे उच्च विचारोंका साथ न दे सकी, जब कुरानके मानने वालोंका नैष्ठिक जीवन (अमली जिंदगी) मुझ पर आरोग्यप्रद और आल्हादिक प्रभाव न डाल सकी, जब मैं इस अन्धकार आच्छादित वायु चक्रमें इधर उधर हाथ मारकर खेदित और श्रमाकुलित हो रहा था, तो मुझे अन्दरसे निकालनेके निमित्त वैदिक, शिक्षाके प्रकाशित भुवन भास्करकी रश्मियोंने मेरे पथको प्रकाशित किया, और मुझे अन्ध कूपसे निकालकर प्रकाशमय भूमिमें पहुंचाया, मैं अरबके मरुस्थलसे निकलकर गङ्गा और यमुनाके तटों पर आया, जहां वेदोक्त शिक्षाका वह मिष्टाम्बु [शरबत] मिला, जिसने मेरी हार्दिक पिपासाको शान्त कर दिया। मेरे हृदय और मस्तिष्कको शान्ति प्राप्त हुई।

मुझे पुराने ऋषियों और मुनियोंकी सन्तानमेंसे कुछ ऐसे चेहरे दिखाई दिये कि जिनके पास जानेसे और जिनके समीप वर्षों तक रहनेसे मुझे विश्वास हो गया कि सचमुच चारों ओर अरबी मरुस्थली और अरबके मरुस्थलीय तटसे शुष्क हुये मेरे हृदय और मस्तिष्क ही नहीं हैं, वरन इस समय भी बहुतसे हृदय हैं जो अद्यावधि उष्ण वायुके झोकोंसे रक्षित हैं और

आत्मिक प्रभावोंको हवन की सुगन्धिके समान अब भी अपने आस पास इस प्रकार फैला रहे हैं कि जिस प्रकार सहस्रों वर्ष पूर्व गङ्गा और यमुनाके तटों पर बैठे हुए ऋषियों, और हिमालय पर्वतकी लहलहातीहुई शिखिरोंपर विराजमान् मुनियोंके, आत्म-विवेकमें लवलीन हृदयोंसे वह आत्मिक वायु बहती थी कि जिस के झोंके सहस्रों वर्ष पश्चात् भी यूरूप और आमेरिकाके जाग्रत मस्तिष्कों और आत्मविवेक जिज्ञासुओंको अद्यावधि सुगन्धित कर रहे हैं, और भविष्यत्में इससे भी अधिक करेंगे! यह सुग-न्धित झोंके कहांसे और किसके लिये? वेदोंकी शिक्षासे सत्यता पर मोहित और आत्मविवेकके जिज्ञासुओं लियेके! भला क्या सम्भव हो सकता है कि एक ईर्षा रहित हृदयको चमेलीके नव विकसित पुष्पोंकी सुगन्धिका झोंका संतुष्ट कर दे और वह फिर भी अपने हाथसे वर्षोंसे ग्रहण किये हुये एक जर २ चर्म वस्त्रको न गिरावें, क्या सम्भव हो सकता है कि पुरुषको हरित तृण संकुलित भूमि दृष्टि पड़ जावे और वह फिर मरुस्थलीय उष्ण वायुके झोकोंसे बचनेके लिये इस हरित तृण संकुलित भूमिकी ओर न भाग आवे! नहीं कदापि नहीं! प्रत्येक पुरुष मरुस्थलीकी अपेक्षा हरित तृण संकुलित भूमिपर अधिक रीझता है। प्रत्येक मनुष्य तिक्त जलकी अपेक्षा मिष्ठाम्बुकी अधिक आकांक्षा करता है, प्रत्येक पुरुष जीर्णकी अपेक्षा नवीन सुखदका अभिरुचिक है उस दशामें कि वह सत्य विवेककी आंखसे ईर्षाकी ऐनक (उप-नयन) को उतार कर सत्यको सत्य, हरितको हरित और पीत को पीत ही देखनेकी योग्यता रखता हो! मैंने ईर्षाके प्राणान्तक रोगसे आरोग्यता प्राप्त की। मत द्वेषके काले पर्दे मेरी आंखोंके

सामनेसे दूर हुए। ईर्षाको चतुर्दिक भीतसे मेरा शिर बाहर निकला तो क्या देखा कि जिस गड्ढेमें मैं पड़ा हुआ हूं वह मेंडकके कूपको समान परिमित और संकीर्ण तथा तिमिरमय है! जब कि इससे बाहर (सत्यता) सचाईका समुद्र अपरिमित और वैदिक प्रकाशसे प्रकाशित जीवन नौकाको मातृवत गोदसे लगाये हुए उस किनारेको ओर ले जारहा है कि जो जीवनका उद्देश्य है। यदि मैं अपने कतिपय सधर्मियोंके समान ईर्षाका सेवक और सत्य तथा सचाईसे घृणा करने वाला होता तो मैं कदापि इस संकीर्ण और अन्धेरे कूपमेंसे न निकल सक्ता, और मुझे वह प्रकाश न प्राप्त होता कि जिसको मैं प्रसन्नता पूर्वक वर्त रहा हूं! पर मेरे लिये आवश्यकीय हुआ कि मैं प्रकाश और अन्धेरेका निर्णय करूं और उनमें से श्रेष्ठको ग्रहण करूं। मैंने सत्यताको दृष्टिमें रखकर और ईर्षासे रहित होकर भिन्न २ मतोंका (*CAMPARATIVE STUDY*) तुलना मय अध्ययन आरम्भ किया। एक ओर कुरान है तो दूसरी ओर बाइबिल एक ओर बुद्धमतकी पुस्तकें हैं तो दूसरी ओर वैदिक लिटरेचर (ग्रन्थ)! मैंने कुरान और इस्लाम (यवन मत) को सबसे निकृष्ट कक्षामें पाया, बाइबिल और ईसाई मतको इससे और कई कक्षा ऊपर और श्रेष्ठ पाया। किंतु बौध मतको ईसाई मतसे उच्च पाया। मैं ईसाई मतस्वीकार कर लेता, यदि ईसायतका दोतसलीसेंमें कितनी ही अनर्गल बातों सहित मेरे मार्गमें रोक न बनती। अर्थात् प्रथम साधारण तसलीस अर्थात् पिता पुत्र तथा पवित्रात्मा तीनोंको ईश्वर मानना, द्वितीय विशेष तसलीस तीन मुख्य भारी पापके कामोंकी अर्थात् प्रकृत्यत्व, (मादीयत) मांस भक्षण

और मद्यपान। इससे आगे कदाचित् मैं बौद्ध मतको स्वीकार करता, यदि मुझे बुद्ध मतसे अधिक प्रकाशमान-वरन बुद्ध मत का उद्गमस्थान तथा निकासस्थान वैदिक धर्म न मिल गया होता! निदान मेरे दुःखित हृदयने मुझे विवश किया कि हर प्रकारका भय और डर त्यागकर प्रत्येक भांतिके उल्हने और विप्रलंभ दृष्टिवाह्य करके, इस धर्मकी पताकाके नीचे आजाऊं, इस सभाका सभासद् बन जाऊं कि जिसके प्लेटफार्मपर खड़ा होने का मैं आज अभिमान करता हूं। मुझे यह मान प्राप्त न होता यदि आर्य्यसमाज जीवित और जागृत, सत्यता पर निर्भर और सत्यता (सचाई) पर मोहित होने वाली सुसाइटी (सभा) होकर सत्यताके नियमोंका विना रोक टोकके प्रचार करने वाली और किसी प्रकारके विरोधका ध्यान चित्तमें लाकर भयभीत न होने वाली सभा न होती। मैं फिर कहता हूं कि आर्य्यसमाज के साहस को धन्यवाद है! वेदकी पवित्र शिक्षाने भारतवर्षमें ऐसी सुसाइटी और ऐसे पुरुष पैदा कर दिये हैं कि जो भले प्रकार जानते हैं कि सचाई (सत्यविवेक) एक ही है! आजसे पचास वर्ष पूर्व एक जन्मके मुसलमान पुरुषके पगोंसे कदाचित यह मंदिर और प्लेटफार्म अपवित्र होगया हुआ समझा जाता! परन्तु आज वह दशा नहीं है। वेदकी शिक्षाने यह सिद्धिकर दिया है जिस प्रकार एक सदाचारी जन्मका ब्राह्मण वेद मंत्रों और उनकी सत्यताको सर्व साधारके सम्मुख प्रकाशित करने का अधिकारी है, वैसे ही एक सदाचारी जन्मका मुसलमान भी उसी मंदिरमें और उसी प्लेटफार्म पर खड़ा होकर वेदके सत्यज्ञानको प्राप्त करके अनेक वेदके जिज्ञासुओंके कानों तक अपनी

ध्वनि पहुंचा सक्ता है! निस्संदेह वेदकी पवित्र शिक्षाका भास्कर ज्यों २ अपना प्रकाश फैलाता जायगा त्यों २ असभ्यता और अन्धकार दूर होता जायेगा! और असंख्य जो पगडंडियों पर पड़े हुए हैं इस प्रकाशके होनेसे सुखके विस्तृत मार्गका ग्रहण करलेंगे। निदान मैं आज अपनी मुसलमानी पगडंडीको त्याग कर वैदिक धर्मके राज्य पथ (शाहीराह) में पग धरता हूं। परन्तु प्रथम इसके कि मैं बैठ जाऊं, मैं उचित समझता हूं, कि उपस्थित समुदायके सम्मुख कुछ कारण कुरानकी शिक्षा के विषयमें वर्णन करूं कि जिनके कारण मैंने "कुरानी इसलाम" को अपने हृदय और मस्तिष्क के विरुद्ध पाकर त्याग दिया।

मैंने बहुत काल तक कुरानकी छान बीनकी किंतु मुझे मोती और मणियोंके स्थानमें पत्थर और कङ्कड़ ही मिले, मैं कह सक्ता हूं कि आत्मज्ञानका प्यासा जो कुरानको जंगली झलक के पीछे भागता है वह उष्ण वायुके झोकोंसे जो अरबके मरुस्थली सदृश अरबी कुरानमें चल रहे हैं अपनी आत्माको हानि पहुंचा लेता है। माना कि वह इससे वेसुधि क्यों न रहे। क्योंकि आत्मज्ञान कुरानसे ध्रुव तारे और पृथ्वीके परस्परकी दूरीसे कुछ कम नहीं है। यदि मैं कुरानसे आत्मज्ञान ढूंढ़ना चाहूं तो, कदाचित मेरा यह काम इन्द्रायनकी बेलिसे मीठे खर्बूजों और नीमके पेड़से मीठे आम्रफलोंकी लालसा रखनेसे कुछ कम असङ्गत न होगा। मैंने अपने अनुभवसे कुरान और आत्मज्ञानको दो विरुद्ध दिशाओंमें चलते देखा। प्रथमकी गति दक्षिणकी और द्वितोयकी उत्तरकी ओर! और वास्तवमें जिस शिक्षाको ग्रहण करके महमूद जैसा पुरुष (अमीनलमिल्लता)

मतका पेशवा और औरंगज़ेब जैसे पुरुष मुहीउद्दीन अर्थात् मत जीवक बन गये। वह शिक्षा आत्मज्ञानको बायें कानसे पकड कर हृदयरूपी मन्दिरसे बाहर निकाल देती है! मैं स्वीकार करता हूं कि कुरान परमेश्वरको आकाश और पृथ्वीका प्रकाशक बताता है, परन्तु शोकका स्थल है, इस प्रकाश पर जो सहस्रों स्याहीके बोरे भर २ कर डाले गये हैं, उनसे परमेश्वरका प्रकाशमय चेहरा तवेसे भी अधिक काला कर दिया गया है! संसारकी उत्पत्ति विषयमें जो शिक्षा है, उसने बाइबिलकी गप्पोंको भी मात कर दिया है! कुरानमें जो कयामत (प्रलय)का चित्र (नकशा) जमाया गया है। वह निपट निराले ढङ्गका है। बहिश्त (स्वर्ग) के शराब व कबाब, हूर व गिलमां, सोने चांदी आभूषणोंसे परमेश्वर प्रत्येक मतों और पढ़े लिखे मनुष्यको बचावे, पशुओंकी विकलता (बिलबिलाहट) कि जिनके रुधिरसे परमेश्वरकी प्रसन्नता और स्वर्गकी प्राप्ति समझी जाती है, असभ्यताके इच्छुकोंके अतिरिक्त पत्थरको भी कम्पायमान करने वाली है। सृष्टि क्रम विरुद्ध किस्से कहानियों और ढकोसलोंने कुरानको एक साधारण प्रमाणिक पुस्तककी कक्षासे भी नीचे गिरा दिया है।

यवन मतसे भिन्न पुरुषोंको काफिर (अधर्मी) और मुशरिक * कहकर उनको अपवित्र समझने और उनसे दूर रहनेकी दीक्षा ने सबसे मेल रखनेके नियमकी जड़में दीमक लगा दी है। स्त्री को केवल खेती और मिलकीयत (पूंजी) समझनेके नियमने सच्चे स्त्री और पति बननेके स्थानमें परस्पर स्वामी और सेवकके

* वह पुरुष जो केवल ईश्वरको न मान उसके साथ किसी औरको भी सम्मिलित करता है।

सम्बन्धको भी लज्जित कर दिया है। मैं साहसके साथ कहता हूं कि कुरानी शिक्षाने कुरानको ईश्वरीय पुस्तककी पदवीसे गिरा कर एक सभ्य पुरुषकी साधारण पुस्तकसे भी नीचे गिरा दिया है, और कुरानके दुर्ग (किले) को कुरानकी ही बारूदने उड़ा दिया है। आज कलके बहुधा नवीन प्रकाशसे युक्त मुसलमान यवन मतके रक्षक इस किलेको बचानेके निमित्त सर्व बलसे प्रयत्न कर रहे हैं और इस पर नवीन खोल चढ़ा रहे हैं, परन्तु सइंस [प्राकृत विद्या] के नियमोंके सामने जीर्ण दुर्ग (बोदे किले) धड़ाम २ गिर रहे हैं।

उपस्थित सभ्यगण! कुरानी शिक्षा क्यों समीक्षा (एतराज) के योग्य हैं! इसके निमित्त मैं कुछ बातें आपके सन्मुख उपस्थित करता हूं।

प्रथम—परमेश्वर विषयमें कुरानकी शिक्षा निपट भद्दी और अत्यन्त समीक्षा (एतराज) किये जाने योग्य है। परमेश्वरको एक साधारण पुरुष कल्पना करके उस में कुछ अच्छे गोंगुके अतिरिक्त विशेषतया ऐसे गुण भी दर्शाये गये हैं जो किसी नीच कक्षाके पुरुषमें पाये जाते हैं, मैं यहां पर उदाहरणकी भांति कुछ बातें प्रकट करता हूं।

कुरानको शिक्षा है कि परमेश्वर बड़ा मक्कर और फ़रेबी है देखिये:—

उल्था—मकर किया काफ़िरोंसे और मकर किया खुदासे, और खुदा बेहतर है—मकर करने वालेमेंसे (सी० ३ अलउमरा आयत ५३। और इसी प्रकार सीपारा ९ सूरत इन्फ़ाल आयत ३० और सीपार ३० सूरत उल्तारक आयत १५ व १६ और अन्य

बहुतसे स्थानोंमें भी ख़ुदा (परमेश्वर) को मक्कारोंका मक्कार और फरेबियोंका फरेबी लिखा गया है! कतिपय भाष्यकारों मुफ़सिरोंने जब देखा कि खुदा पर दोषारोपण है तो उन्होंने (मकरअल्लाही) के अर्थ "खुदाने इन लोगोंकी मकरकी खूब सज़ा दी" कर दिये परन्तु यह अत्यन्त अशुद्ध है।

सज़ा (दण्ड) और ज़ज़ा 'पारितोषिक' के अर्थ 'मक़र अल्लाहो' मेंसे कदापि नहीं निकलते। यदि अरबी व्याकरणके नियमसे भी देखा जावे तो भी 'मक़र अल्लाही' के अर्थ सज़ा 'दण्ड' नहीं होसक्ते।

मक्र सामान्य भूत है इसके रूप यों होंगे।

	एक वचन	दो वचन	बहु वचन
पुल्लिंग अन्य पुरुष	उस एक आदमीने फ़रेब किया	उन दो आदमियोंने फरेब किया।	उन बहुत आदमियोंने फरेब किया।
स्त्रीलिंग अन्य पुरुष	उस एक स्त्री ने फरेब किया	उन दो स्त्रियों ने फरेब किया	उन बहुत स्त्रियोंने फरेब किया।
पुल्लिङ्ग मध्य पुरुष	तुमने फरेब किया	तुम दोनों ने फरेब किया।	तुम सब ने फरेब किया
स्त्रीलिङ्ग मध्य पुरुष	तू स्त्री ने फरेब किया	तुमदोनों स्त्रियों ने फरेब किया।	तुम सब स्त्रियोंने फरेब किया।
पुल्लिंग व स्त्रीलिंग उत्तम पुरुष	मैंने फरेब किया		हमने फरेब किया।

क्या यदि "मक्र [कपट] के अर्थ बहु बचन अन्य पुरुष पुल्लिगमें—"उन लोगोंने फरेब किया" हुये तो एक बचन अन्य पुरुष पुल्लिगमें "उस आदमीने उन लोगोंको मक्र की खूब अजा दी" होंगे ? कदापि नहीं ! हां यदि "मक्र" के अर्थ "फ़रेबकी सजा देनेके" लें तो फिर हमें अन्य पुरुष बहु वचनमें भी वही लेने पड़ेंगे अर्थात् "उन आदमियोंने खूब फरेबको सज़ा दी और "खुदाने भी उनको खूब फरेबकी सज़ा दी" [एक वचनमें] जो निपट अनुचित और बुद्धि वाह्य हैं ! क्योंकि इससे यह पता नहीं लग सक्ता कि उन आदमियोंने किसीको फ़रेबको सज़ा दी ? क्या पैगम्बरने प्रथम उनसे फ़रेब किया तो उन्होंने फ़रेब को सज़ा दी या क्या ? सारांश यह कि "मक्र [कपट]" के अर्थ फ़रेबकी सज़ा देनेके कदापि नहीं हो सक्ते । मुफसिर [भाष्य-कार] लोग जान बूझ कर अशुद्ध अर्थ कर रहे हैं । इसी प्रकार कितने ही और शब्द है कि जिनके अशुद्ध अर्थ लिये हैं । केवल इस हेतुसे कि परमेश्वर [खुदा] पर जो मक्कार [कपटी] फ़रेबी [छली] मखोलिया [मसखरा] और लड़ाका आदि दोष लगाये है वह धुलजावें परन्तु अशुद्ध अर्थ करनेसे दोष नहीं धुला करता है ।

तफ़सीरें [कुरानके भाष्य] बहुधा विश्वास योग्य नहीं हैं । उनके ऐतिहासिक वृतोंको किन्हीं अंशोंमें सत्य माना जा सकता है यद्यपि इस विषयमें भी कुरानके भाष्यकरोंने बहुधा स्थलों पर बड़ी २ अशुद्धियां की हैं ।

क्योंकि मेरा अभिप्राय यहां पर कुरानका कोई नया भाष्य करके आप महाशयोंको दिखलाना नहीं है । अतएव मैं प्रत्येक

विषय पर व्योरेवारसे व्यर्थ समय नष्ट नहीं करना चाहता हूं भविष्य विषयोंमें केवल कुरानका प्रमाण मात्र देना ही उचित समझता हूं। यदि किसीको सन्देह हो तो कुरानसे देख सक्ता है।

सो० ३ सू० उमारान् आ० ५३।

[२] कुरानकी यह शिक्षा है कि खुदा [परमेश्वर] फरेब करता है और धोखे बाजी करता है। किसी भलेमानस आदमी पर जो सच मुच फरेबी न हो यदि यह दोष लगाया जावे तो वह पीछे पड़ जायगा और अदालत तक पहुंचेगा! परन्तु परमेश्वर पर फरेबबाजीका दोषारोपण करना किसी बड़े ही साहसी मनुष्यका काम हो सक्ता है! शोक कि मैं इस बातको स्वीकार नहीं कर सक्ता।

सो० ९ सू० अनफाल आ० ३०।

(३) कुरानकी यह शिक्षा है कि खुदा (परमेश्वर) आत्मिक रोगियोंके आत्मिक रोगोंको जान बूझ कर बढ़ाता है और फिर ऊपरसे अजाब (दुःख) भी देता है। निस्सन्देह यह बहुत बड़ी निर्दयता और अन्याय है कोई बुद्धिमान पढ़ा लिखा ईश्वर को ऐसा अन्यायी और निर्दयी स्वीकार नहीं कर सकता है।

सी० १ सू० बकर आ० १०।

(४) कुरानकी यह शिक्षा है कि परमेश्वर बड़ा लड़ाका है, भला जब ईश्वर ही लड़ाका हो गया तो फिर पृथ्वी पर सम्मेलन और शान्ति कौन स्थिर कर सक्ता है! लड़ाका आदमी परमेश्वरको भी लड़ाका कह सकता है! परन्तु वह जो लड़ाईसे घृणा करता है। वह ईश्वर पर ऐसा भयानक दोष आरोपण

नहीं कर सकता! उचित था कि कुरानमें ईश्वरको इन बातोंके साथ स्मणर न किया जाता! मुझे हार्दिक शोक है कि मैं कुरानकी इस शिक्षाको नहीं मान सकता।

सी० ५ सू० नासय आ० ८४।

(५) कुरानको यह शिक्षा है कि परमेश्वर मनुष्यमें वैर डाल देता है, प्रलयके दिन तक परस्परका द्वेष फैला देता है। जिज्ञासु और ईश्वर प्रिय मनुष्योंके लिये इससे अधिक घृणित शिक्षा ओर क्या हो सक्ती है कि जिस परमेश्वरको वह अपने जीवनका उद्देश्य और परम पिता समझता है उस पर ऐसे महान और दोषयुक्त धब्ब लगाये जावें, यदि द्वेष फैलाने वाले और वैर डालने वाले मनुष्य परमेश्वरको भी द्वेष फैलाने वाला तथा वैर डालने वाल समझें तो सम्भव है। परन्तु ईश्वर प्रिय, शुद्ध ईश्वर पर ऐसा दोषारोपण नहीं कर सक्ता!

सी० ६ सू० मायदा आ० १५।

(६) कुरानकी यह शिक्षा है कि परमेश्वर न्यायाकारी है परन्तु तोबाह (प्रायश्चित्त) स्वीकारकर लेता है और पाप (गुनाह) क्षमा कर देता है। भला न्याय और क्षमा [मुआफी] का मेल कहां? जहां मुआफी [क्षमा] आई न्याय दूर हुआ। संसार का सर्व शक्तिमान महाराजा जिस को चाहे छोड़दे जिसको चाहे मार डाले! परन्तु इससे वह न्यायकारी नहीं होसक्ता? ईश्वर विषयमें यह शिक्षा महान विवादास्पद है।

सी० २ सू० बकर आ० १६१।

(७) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा क्षमा करने वाला (ग़फ्फार) है परन्तु कुरान को पढ़ते जाओ और नर्क के

मनुष्यों को विलाप पर ध्यान दो कि किस प्रकार चिल्ल रहे हैं? क्षमा मांग रहे हैं और पछितावा कर रहे हैं, परन्तु परमेश्वर की क्षमा यदि कोई पादार्थ है तो प्रलय के दिन उड़ जायगी? और परमात्मा ढीठ होजायगा।

ऐ चतु तू रक्तके आंसू बहा कि खुदा के विषय में कुरान की शिक्षा कैसी भद्दी है।

सी० ५ सू० नसाय आ० ५५।

(८) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा बुराई को पसन्द नहीं करता, परन्तु कितनी लज्जाकी बात है कि उसको बदी का पैदा करने वाला माना गया है। नादान लोग तक्दीर और तदबीर और आजमायश आदि का ढकोसला बीच में लाकर परमात्मा को इस दोष से बचाना चाहते हैं। परन्तु इससे उनका कुछ प्रयोजन सिद्ध नहीं होता, जबतक कुरान उपस्थित है। कुरानी परमात्मा इन दोषों से बच नहीं सक्ता?

सी० ५ सू० नसाय आ० ७२

(९) कुरान की यह शिक्षा है कि जो कुछ होता है परमात्मा की आज्ञा से होता है। तो फिर व्यभिचारी मनुष्यों का व्यभिचारी मदिरापान, डांका चोरी प्राणघात हत्या, लूटमार, इत्यादि सब कार्य परमात्मा की आज्ञा से ही हुए शैतान बिचारे को क्यों कलङ्कित किया जाता है। शोक! अज्ञानी पुरुषों ने परमात्मा को क्या तमाशा बना दिया।

सी० ११ सू० यूनुस आ० ४९

(१०) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा मनुष्यों के उपदेश के लिये नबी भेजता है। परन्तु कुरान में स्थान २ पर देखो-

गे कि परमात्मा हो जान बूझ कर मनुष्यौंको कुमार्ग में लेजारहा है। और वह स्वयं ही इस बात का पक्षपाती माना गया है; 'हा हम गुमराह करतेहैं उसको कोई राह नहीं दिख सक्ता" भला फिर पैगम्बरों के भरमार का क्या प्रयोजन? और शैतानों को दोषी ठहराने की क्यों आवश्यक्ता पड़ी।

सी० ६ सू० मायदा आ० ४५

(११) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा पवित्रता को पसन्द करता है।परन्तु कुरान को पढ़ने से पता लगता है कि 'खुदा ने नापाक दिल को पाक न करना चाहा बल्कि नापाकी को और भी अधिक कर दिया और गुमराही (सत्मार्ग विमुखता) बढ़ादी" बच्चों कासा खेल है! एक तुच्छ बात को स्थिर रखने के हेतु बहुत कुछ गड़न्त करनी पड़ी परन्तु निष्प्रयोजन!

सी० ६ सू० मायदा आ० ४५

(१२) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा सब दोषों से रहित हैं, परन्तु देखिये शैतान को बहकाने वाला और गुमराह करने वाला (सत्मार्ग से भुलावा देने वाला) परमात्मा ही है, हम शैतानी ढकोसले से कल्पना कर सक्ते हैं कि शैतान लोगोंको बहकाता है, परन्तु शैतान का बहकाने वाला परमात्मा है! शैतानने स्वयं परमात्माके सम्मुख कह दिया कि ऐ परमात्मा जिस प्रकार तूने मुझे भुलावा दिया मैं भी इसी प्रकार तेरे मनुष्यों को बहकाऊंगा!

परमात्मा शैतान की इस बात को सुनकर केवल तर्क की धमकी देकर चुप हो रहा और इस बिषय में मुख तक न खोला और यह न कह सका कि ऐ शैतान मैंने तुम को नहीं बहकाया!

कहता तो तब जब कि उस ने भुलाया न दिया होता! शोक कि परमात्मा को कितना दूषित किया गया है कि मानो शैतान का शैतान बना दिया गया है! ऐ हृदय तू रोदन कर और अपने भाइयों के लिये आंसू बहा!

सी० ८ सू० एराफ आ० १६।

(१३) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा ठट्ठा मसखरी करने वालों को पसन्द नहीं करता, परन्तु शोक! वही परमात्मा ठठोरा, मसखरा, माना गया है! परमात्मा को भङ्गड़ीन का भङ्गड़ी बना दिया! जहां भङ्गड़ो भङ्ग पोकर एक दूसरे से ठठोल करते हैं। वहां परमात्मा भी बीच में आ कूदता है और वैसाही भङ्गड़ीपन आरम्भ कर देता ह, यह कितनी लज्जास्पद बात है कि परमात्मा मसखरा और ठठोर कहा जावे! परमात्मा पर ऐसे दोषारोपण वह पुरुष कर सक्ता है जो या तो नास्तिक हो या जिस ने ईश्वर के भावको निपट न जाना हो। मुझे नहीं विदित कि मैं अपने मस्तिष्क को ऐसा रद्दी किसी प्रकार बनालूं कि इस शिक्षा को मानने लगजाऊं कहां से मैं अपने ऊपर द्वेष की काली चद्दरे ओढ़लूं कि परमेश्वर ठठोरा दृष्टि पड़ने लग जावे!

सी० १ सू० बकर आ० १५

(१४) कुरान की यह शिक्षा है कि परमेश्वर सौगन्द खाने को अच्छा नहीं समझता, परन्तु कुरान के पृष्ठों को पलटो देखोगे कि एक विश्वास रहित और झूंठे पुरुष की समा कि जिसकी बात का कोई भरोसा न करता हो, और विवश सौगन्द खाने पर उतारू होता हो, परमेश्वर घोड़ों, ऊंटों, वृक्षों, पर्वतों, पुस्तकों, वायु, सूर्य्य, चंद्रमा, नक्षत्रों इत्यादि की अनेक बार सोगन्द खारहा

है, मानो इसकी बात को कोई विश्वास नहीं करता है, अतएव सौगन्द खाने पर विदित होता है! द्वितीय सौगन्द उस पदार्थ की खाई जाती है कि जिसको सौगन्द खने वाला अपने से बड़ा प्रतिष्ठा योग्य तथा पूजनीय समझता है क्या घोड़े ऊंट, पहाड़, पत्थर इत्यादि को परमात्मा अपने से बड़ा समझ कर इनकी सौगन्ध खाता है? या कुछ और भेद है। आज कल यदि कोई पुरुष अपने वर्णन को प्रमाणित ठहराने के लिये, न्यायालय में अथवा पञ्चायत में अपने घोड़े या ऊट या पहाड़ की सौगन्द खावे तो उस पर हंसी उड़ाई जाती है। विदित नहीं कि अरबी परमात्मा ने अरब निवासियों का अनुकरण क्यों किया? और जिन वस्तुओं की अरब निवासी सौगन्द खाते थे उनको सौगन्द क्यों खाई! भारत वर्ष के आम आड़ू आलूचे, गंगा, यमुना, और हिमालय की सौगन्द क्यों न खाई यह केवल बालकों को सुलाने के दुलराव का गीत (लोरी) है! और परमात्मा का नाम बदनाम किया है। मैं इस के अतिरिक्त कि अपने भाइयों के अर्थ आंसू बहाऊं और क्या कर सक्ता हूं।

सो० ३० सू० शम्स आ० १-६

(१५) कुरान की शिक्षा है कि परमात्मा "कुन" कहने से सब कुछ कर सक्ता है परन्तु क्या वह उन्मत्त हो गया था, वा अपनी "कुन" की शक्ति को भूल गया था कि उसने व्यर्थ पृथवी और आकाश बनाने में छः दिवस लगा दिये "कुन" ही क्यों नहीं कह दिया या तीन दिन में ही सब कुछ क्यों न बना दिया।

सी० १६ सू० मरयम आ० ३६

(१६) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा अति पवित्र

है, परन्तु कुरान को पढ़ने से विदित होता है कि उसकी आत्मा एक स्त्री के गर्भाशय में भी जा सकती है और मासिक धर्म का रज खासकती है और नौ मास अपवित्रता में पड़ी रहकर वर्षों मनुष्यों के शरीर में बंध को प्राप्त होकर फाँसी द्वारा मुक्त होसक्ती है ! मुझे हार्दिक शोक है कि कुरान ने बाइबिल का अनुकरण किया।

सी० १७ सू० अम्बिया आ० ६१

(१७) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा पृथ्वी और आकाश पर सिंहासन आरूढ़ है मानो सब स्थानों पर उपस्थित और द्रष्टा है उसका कोई विशेष स्थान नहीं है ! परन्तु आकाश के ऊपर अर्श को ८ फरिस्तों का शिर पर उठाये हुए खड़े होना जबराईल का परमात्मा की ओर से उतरना, महात्मा ईसा का आकाश पर उड़जाना, अरबी पैगम्बर का बुराक् (गदहा विशेष) पर सवार होकर आकाश की सैर और परमात्मा से बात चीत कर आना, शैतानों का आकाश पर जाकर छिप छिप कर परमात्मा और फरिस्तों की बात चीत का सुनना, और उन पर तारागण तोड़ कर मारे जाना इत्यादि २ क्या यह इस प्रकार के ढकोसले हैं कि जिन से यह साबित होसके कि परमात्मा पृथ्वी पर भी है यदि पृथ्वी पर भी होता तो फिर उपरोक्त ढकोसलों की क्या जरूरत थी ! रोते हुए बालक को बहलाने के लिये यह कहानियां लाभकारी होसक्ती हैं परन्तु जिज्ञासू इन को परमात्मा की अपकीर्ति और अप्रशंसा समझता है निदान मैं अपने भाइयों के अर्थ ईश्वर से हार्दिक प्राथना करता हूं कि वह सत्यवेत्ता होसकें !

सी० ३ सू० वकर आ० २५५

(१८) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा मुशरिकों ※ से शोकातुर है । मुशरिक अपवित्र हैं। परन्तु सब से पूर्व खुदामें शिर्क' (प्रभु के साथ अन्यको मिलाने) की शिक्षा फरिस्ता' को दी कि आदमी को डण्डवत करो और जब एक फरिस्ते ने परमात्मा के सिवाय अन्य को मानने से नाहीं की तो उसको मलाऊन ※ कर दिया । अब दण्ड किसको मिले शैतान को या परमात्मा को ? मुशरिक कौन हुआ परमात्मा वा शैतान !

सी० १ सू० बकर आ० ३४

(१९) कुरान की शिक्षा है कि परमात्मा किसी को नहीं सताता ! भला परमात्मा ने कुछ मनुष्यों के निमित्त कि जिन्हों ने नूह का कहना न माना सर्व संसार को क्यों डुबो दिया ! और मनुष्यों ने क्या पाप किया था ? पशुओं का क्या दोष था ? कि इन सब को भी तूफान में डुबो दिया । और फिर बढ़ २ कर बातें मारने लगा कि हमने नूह का तूफान उतार कर सब को डुबो दिया । क्या निरपराध पशुओं और मनुष्यों को डुबो देना, निर्दयी का काम नहीं है तो और किसका है निर्दयी को जो दण्ड है वह प्रत्यक्ष है । अब परमात्मा को नर्क में डाला जावे या जिसने कि परमात्मा पर यह मनघढ़न्त दोषारोपण किये उसको !

सी० १८ सू० मामिन्न आ० २७

※ एक परमेश्वरके साथ किसी और को भी मिलाकर परमेश्वर माननेवाले पुरुषको 'मुशरिक' कहते हैं ।

※ ईश्वर के न्यायालयसे जो निन्दा करके निकाला जावे, उसे 'मलाऊन' कहते हैं अभिप्राय 'शैतान' से है ।

(२०) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा ने बहुधा मनुष्यों के अन्तःकरणों पर मुहर लगादी और कानों पर पर्दे डाल दिये कि वह उसकी बात को न समझ सकें परन्तु फिर उनको समझाने के लिये नबी भेजना निपट अज्ञानता है! और जब कि उसने स्वयं ही कानों पर मोहर लगादी तो दण्ड उनको क्यों चाहिये? परमात्मा स्वयं नर्क में पड़े वा जो इस प्रकार की फिलासफी (तत्वज्ञान की पुस्तक) बनाता हो वह?

सी० १ सू० बकर आ० ७

शोक! महान्शोक! सत्य मार्ग की शिक्षा कहां!

(२१) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा किसी की सिफारिश स्वीकार नहीं करता परन्तु तत्काल ही फिर कह दिया कि हां कतिपय पुरुषों की सिफारिश वह स्वीकार करेगा। भला सिफारिश और पापका क्या सम्बन्ध? कुरानी परमात्मा एक स्वतन्त्र नियम शून्य राजा है कि जिस के सम्मुख अपराधी लाये जाते हैं मन्त्री सिफारिश कर रहा है अन्य अधिकारी राज्य के अन्य कार्य्य भुगता रहे हैं और अच्छा औरङ्गजेबी दरबार लगा हुआ है; खुदा करे कि मेरे भाइयों की आंखें खुलें और सत्यता का प्रकाश दिखाई दे उपरोक्त थोड़ी सी बातें कुरानी खुदा के सम्बन्ध में हैं जिन के पढ़ने से इसका अनुमान हो सकता है कि वह क्या "बला" है और किस मस्तिष्क ने उसको गढ़ा है क्या खुदा सम्बन्धी ऐसी शिक्षा आत्मिक शिक्षा का खून नहीं करती! क्या मक्कार, धोखेबाज, लड़ाके, झगड़ालू की रखने वाले, मसखरे, ठठोल, अन्यायी आदि गुणों से भूषित खुदा की उपासना करने से हम में उपरोक्त अवगुण प्रवेश न करेंगे! और क्या हमा-

री आत्मा का इस से खून न होगा ? उपस्थित सज्जन ! इस का स्वयम् उत्तर दें। खुदा सम्बन्धी यह शिक्षा उन सम्पूर्ण अच्छी बातों पर भी कालौंछ लगाती हैं जो कुरान में कहीं २ रेतेली उंगल के वृक्ष कुंज की भांति लिखी है यही नहीं की कुरान खुदा की पुस्तक होने के दरजे से गिरजाता है किन्तु वह एक साधारण पुस्तक से भी नीचे हो जाता है—

सी० ३ सू० बकर आ० २५५

इस के सिवाय दूसरी बात जो कुरान की शिक्षा में अस्वीकार करने योग्य है वह मनुष्योत्पत्ति है मुझे शोक के साथ कहना पड़ता है कि बाइबिल से ली हुई कहानियों का नाम खुदाई बाणी रख दिया गया है। आदम की कहानी जो बाईबिल में है उसी को कुछ हेर फेर करके कुरान में लिखा गया है--कुरानी बाबाआदम कोई नई बला नहीं है किन्तु उसकी कहानी बच्चा बच्चा जानता है-मैं इस बात को आदर्श बनाकर कि ऐसी झूठी बातों का एक खुदाई पुस्तक का दम भरने वाली पुस्तक में होना अयोग्य है कुछ बातें नीचे लिखता हूं—

[२२] कुरान की यह शिक्षा है कि ईश्वर ने आदम को मिट्टी से बनाया और उसमें जीवन डाला अर्थात् प्रथम एक मिट्टी का पुतला बनाया और फिर उसमें आत्मा का प्रवेश किया गया वह आत्मा कहां से आई ? यदि हम यह कहैं कि ईश्वर ने अपनी आत्मा उसमें डाली तो मानना पड़ेगा कि ईश्वर में भी वह अवगुण हैं जो उसके एक आत्मा में (जो आदम में आये) थे यदि यह कहें कि ईश्वर ने अभाव से भाव (आत्मा) उत्पन्न किया तो यह सर्वथा झूठ है-क्योंकि अभाव से भाव नहीं होस-

त्ता-अभाव नामही उस वस्तु का है कि जिस का कोई स्तत्व नहीं हो सकता, अतएव कुरान की इस शिक्षा को मैं स्वीकार नहीं कर सकता।

परिग्रहण क्रमांक 5340

सी० १४ सू० हजर आ० २८-२९

[२३] कुरान की यह शिक्षा है कि ईश्वर ने आदम से उसकी बीबी को उत्पन्न किया परन्तु यह स्पष्ट नहीं कि वह उससे किस प्रकार पैदा की गई। भला आदम (के पेट) में स्त्रियों की भाँति गर्भाशय था यदि था और उससे उत्पत्ति हुई तो वीर्य्य कहां से आया ईश्वर के यहां से गिरा अथवा किसी फरिशते ने आदम में गर्भ स्थापित किया और क्या फिर एक बीबी को उत्पन्न करके आदम का गर्भाशय गुम होगया अधिक सन्तान उससे क्यों न पैदा हुई? इस दशा में आदम को हम पुरुष कहें अथवा स्त्री? यदि पुरुष तो उसके पेट से उसकी बीबी किस प्रकार उत्पन्न हुई? यदि स्त्री तो फिर उसको एक और स्त्री की क्या आवश्यकता? यदि हम यह कहें कि आदम गर्भाशय रहित तो था परन्तु उसकी बीबी उसकी पसली से उत्पन्न की गई यह भी हंसी की बात है और भला ईश्वर को आदम की पसली तोड़ने की क्या आवश्यकता थी? मिट्टी शेष नहीं रही थी या ईश्वर आदम का पुतला बनाकर ही भूल गया था अथवा दूसरा पुतला बनाना ही भूल गया था? जिस प्रकार एक पुतला बनाया था उसी प्रकार उसीके साथ उसकी स्त्री का पुतला भी तय्यार करके उसमें भी फूंक भर देता। इसके अतिरिक्त ईश्वरका स्मरण शक्ती के अच्छे न होने का हेतु भी देखो। जब ईश्वर ने बाइबिल उतारा तो वहां ही आदम की बीबी का नाम बता दिया परन्तु

कुरान में नाम बताना भी भूल गया। सम्भव है कि यह इस लिये हो कि जहां बाइबिल से और बहुत सी बातें कुरानानुयायी पुरुषों को मिलेंगी वहां आदम की स्त्री का नाम भी मिल जायगा। ईश्वर मेरे भाइयों के हृदय में सत्य का प्रकाश करे!

सो० २३ सू० जुगर आ० ५

[२४] कुरान की यह शिक्षा है कि-खुदा ने आदम को उसकी स्त्री सहित बैकुण्ठ में रख दिया कि भली भांति खाओ, पियो परन्तु इस वृक्ष के पास मत जाना-पापी होजाओगे-हमें कुरान से अनार अंगूर, जैतून, केले आदि वृक्षों के नाम तो मिलते हैं परन्तु उस वृक्षका नाम कहीं मिलता जिसके पास जाने की मनाई की गई थी-इसके लिये फिर हमें बाइबिल खोजनी पड़ती है क्योंकि वह कुरान की अपेक्षा अधिक प्रामाणिक तथा प्राचीन है-सम्भव है कि जब ईश्वर ने बाइबिल उतारी उस समय वह वृक्ष हो और जब कुरान उतारा तो उस समय उसका नाश हो चुका हो! यहां तक कि उसका नाम भी लोहे महफूज (संरक्षित पटिका) से घिस कर मिट गया हो! चेतनाप्रिय पुरुष पूछ सकता है कि जब आदम सस्त्रीक बहिश्तका स्वाद ले रहे थे तो उस समय वहांकी हूरें (अप्सरायें) तथा गिलमान [बिनो डाढ़ी मूंछके लड़के] कहां थे? उनको आदमके साथ नीचे क्यों न फेंका? अथवा हूरें तथा गिलमान उत्पन्न ही उस समय किये गये जब कि आदमकी कहानी तमाम हो चुकी थी और जबराईल [एक मुसलमानी फिरिश्तेका नाम] अरब के रेतीले मैदानोंमें पर मारता उड़ता हुआ अरबियोंको हूरोंके मिलनेका सुसमाचार सुनाकर लड़ाईके लिये उकसा रहा था! मेरे विचारमें हूरें केवल कुरानी

वेश्या हैं कुरानहीके साथ इनकी उत्पत्ति हुई और उसके साथ ही वह समाप्त हो जावेंगी परन्तु शोक कि कितने मेरे ना समझ भाई ऐसे हैं जो हूरोंके पीछे मर रहे हैं। भाइयों! हूरें केवल "मनमोदक" हैं आप सत्य प्रिय बनें।

सी० १ सू० बकर आ० ३४

(२५) कुरानकी यह शिक्षा है कि आदम सस्त्रीक बहिश्तसे निकाला गया और पृथवी पर फेंका गया इत्यादि २ जिसका न शिर है न पैर है; कहींकी ईंट कहींका रोड़ा इकट्ठा कर दिया गया है! बाईबिलके पढ़नेसे बाबा आदमकी कहानी न्यूनसे न्यून एक क्रमबद्ध कहानी प्रतीत होती है परन्तु कुरानमें क्रम भी नहीं है बीसोंबार आदमकी कहानी आरम्भकी गई है। परन्तु दो तीन बातोंके दुहरानेके अतिरिक्त और कुछ मस्तिष्कके भीतरसे नहीं निकल सका। निदान मनुष्य मनुष्य ही है इतनी बातें जो प्रति दिन सुनी जाती हैं उनमेंसे किस २ को याद रक्खें जो याद रह गई वह स्वप्नमें दिखाई दे गई। प्रति फल यह कि आदम और उस की स्त्रीकी कहानी बाईबिलके संग्रहमें देखनेकी जगह स्वयं बाई-बिल हीमें देख सकते हैं। वहां सविस्तार वर्णन किया गया है—वह अन्धाकारका समय अब शेष नहीं रहा जब कि इस प्रकारकी अनर्गल कहानियोंको सुनाकर लोगोंको श्रद्धालु बना लिया जाता था, अब लोग ऐसे ढकोसलोंको स्वीकार करनेके लिये तय्यार नहीं हैं! चाहे इन फटी पुरानी कहानियों पर प्रकाश का मुलम्मा भी चढ़ा दिया जावे। इसके अतिरिक्त प्रलयके सम्बन्धमें कुरानकी शिक्षाको मैं स्वीकार नहीं कर सकता। मेरे कितने ही भाई हैं जो आखें बन्द करके उसको सत्य मनते

हैं। परन्तु मुझे हार्दिक शोक है कि मैं उनसे सहमत नहीं हो सकता।

सी० १ सू० बकर आ० ३५

(२६) कुरानकी यह शिक्षा है कि एक दिन नरसिंगा बजाया जावेगा तमाम प्राणी मर जावेंगे। यह अज्ञात है कि यह नरसिंगा कहां फूंका जावेगा और उसका नाद सम्पूर्ण पृथिवी पर एक साथ किस प्रकार पहुंचेगा! और समस्त प्राणी एक साथ किस प्रकार नाश हो जावेंगे तथा यह बातें कब होगी? और फिर खुद सकल सृष्टिका नाश करके कुछको सदाके लिये वैकुण्ठमें और कुछको सदा के लिये नर्कके घोर दुःखोंमें डालकर आप सदाके लिये निपट बेकार हो जावेगा और संसारके झगड़ों से मुक्त होकर सो रहेगा अथवा क्या करेगा? शाक है कि मैं प्रलयके नरसिंगे आदिको स्वीकार नहीं कर सकता।

सी० ३ये सू० बिना आ० १८

(२७) कुरानकी शिक्षा यह है कि खुदा फिरिश्तोंकी लैन बांधकर प्रलयके मैदानमें आवेगा उसके तख्तको ८ फिरिश्ते उठाये हुए होंगे। भला यदि खुदा तथा अर्श साकार तथा सीमा वाली वस्तुयें नहीं हैं तो फिर उसके उठानेके लिये साकार फिरिश्तोंका होना क्यों है? यदि कोई कहे कि फिरिश्ते भी साकार नहीं हैं। तो जबराईल, मैकाईल आदिके पर तथा शरीरका वर्णन करनेकी क्या आवश्यकता थी? मरियमके पास मनुष्यकी आकृतिमें फिरिश्ता भेजनेका क्या अर्थ हो सकता है। कुरानकी शिक्षासे फिरिश्ते साकार सिद्ध होते हैं। इसी प्रकार खुदा भी जो अर्श पर बैठा हुआ आज्ञायें जारी कर रहा है और

कभी २ अग्निकी आकृतिमें पहाड़ों तथा मैदानोंमें भी उतरता है।

सी० १७ सू० अम्बिया आ० १०४

(२८) कुरानकी यह शिक्षा है कि मुर्दे जाग उठेंगे यह आश्चर्य जनक वार्ता है कि घास पातकी भांति मुर्देसे शिर निकालेंगे! भला जो जला दिये गये, जिनकी राख नदियोंमें बहा दी गई, जिनको सिंह भेड़िये खा गये, वह कबरोंमेंसे क्यों कर उत्पन्न हो जावेंगे! बहुधा मुसलमान शरीरोंका जीवित होना नहीं मानते परन्तु कुरानमें अनेक स्थलोंपर शरीरोंके जीवित होनेके उदाहरण देकर समझाया गया है कि लोग इसपर विश्वास करें कि उनके शरीर फिर जीवित किये जावेंगे।

सी० ३० सू० फजू आ० २२

(२९) कुरानको यह शिक्षा है कि खुदा तराज़ लगा कर बैठेगा और लोगोंके अच्छे बुरे कर्मोको तोलेगा और स्वर्गमें जाने वालोंको उनके कर्म पत्र दायें हाथमें और नर्कमें प्रवेश करने वालोंके बायें हाथमें देगा यह ज्ञात नहीं होता कि खुदाको दुकानदारोंकी भांति तकड़ी बाटोंकी क्या आवश्यक्ता पड़ेगी? भला कर्म भी कोई ठोस वस्तु है, कि जिनको तोल लिया जायगा? कर्मोका तोलना ठीक वैसा ही है जैसे कोई पुरुष तकड़ी बाटोंके साथ अपने बहमीख्यालातको तोलने लग जावे जो सर्वथा पागलपन है। ईश्वर यदि सर्वज्ञ है तो शीघ्र ही उसे सबको बतला देना चाहिये कि तुम्हारे यह २ कर्म हैं निष्प्रयोजन दुःख उठाने की क्या आवश्यक्ता है।

सी० १७ सू० अम्बिया आ० ४७

(३०) कुरानकी यह शिक्षा है कि प्रलयके दिन पहाड़ रुई

का तरह उड़ते फिरेंगे। गप भी यदि मारी जावे तो कुछ बढ़कर भला हिमालय पहाड़ जो कई सौ मील लम्बा तथा कितने ही मील चौड़ा है उड़कर कहां जावेगा ? उधर अमेरीका तथा योरुप के पहाड़ रुई की भांति उड़कर किस आकाशमें पहुंचेगा ?

सी० ३० सू० अलकारय्य आ० ५

(३१) कुरानकी यह शिक्षा है कि प्रलयके दिन चन्द्रमा सूर्यसे जा मिलेगा परन्तु अन्य ग्रह जो सूर्य तथा चन्द्रमासे भी बड़े हैं वह कहां जावेंगे ! उन नक्षत्रोंका कहीं ईश्वरने नाम तक नहीं लिया क्या इस लिये कि अरबके लोग उस समय तक उन के नामसे अनभिज्ञ थे।

सी० २६ सू० कयामत आ० ६

(३२) कुरानकी यह शिक्षा है कि सितारे गिर पड़ेंगे। भला वह गिर कर कहां जावेंगे। क्या पृथिवी पर आजावेंगे ? यदि हाँ ! तो पृथ्वी पर इतने ग्रहोंके लिये स्थान कहां होगा ! और जब खुदा पृथ्वीको भी लपेट लेगा, तो फिर ग्रह किधर भागेंगे ? मैं इस बातको स्वीकार नहीं कर सक्ता।

सी० ३० सू० इन्कतार आ० २

(३३) कुरानकी यह शिक्षा है कि प्रलयके दिन पृथिवी बातें करेगी और ईश्वरको अपनी सारी कहानी सुनावेगी, परन्तु यह ज्ञात नहीं कि सूर्य तथा चन्द्रमा क्यों बातें नहीं करेंगे ! अन्य ग्रह क्यों चुप रहेंगे ? यह सब विद्याहीन पुरुषोंकी बातें हैं जिनको स्वीकार नहीं कर सकता।

सी० २० जुल जोल आ० ४।५

३४—कुरानकी यह शिक्षा है कि प्रलयके दिन ईश्वर लोगों

के मुखपर तो मुहर लगा देगा और उनके हाथ, पांव, कान और त्वचा आदि बोलगे और मनुष्यके कर्मोंको बतावेंगे। मनुष्य उनकी इस क्रूरताको देखकर कहेगा कि तुम मेरे विपरीत साक्षी क्यों देते हो? यह बड़ा आश्चर्य युक्त बात है कि मनुष्यके हाथ पांव आदि जिह्वाका कार्य करेंगे। मैं इसको नहीं मान सकता।

सी- २४ सू- हमसिजदा आ० २०-२१

उपरोक्त प्रलय सम्बन्धी ढकोसलोंको छोड़कर स्वर्ग सम्बन्धी कुरानकी शिक्षा और भी कुत्सित और घिनावनी है। सच पूछो तो कुरानकी शिक्षाने स्वर्गको ऐसा बुरा घर बना दिया है कि जहां जाना भले मानसोंका काम तो कदापि नहीं है, परन्तु कितने ही मूर्ख लोग स्वर्गकी बात ठीक मान कर रात दिन उसकी प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं और मन गढ़न्त बातोंका आखेट बन कर वास्तविक सचाईको हाथसे गंवा बैठे हैं। कुरानी स्वर्ग क्या वस्तु है? इसका कुछ चित्र खींच कर आपके सन्मुख उपस्थित करता हूं।

३५—कुरानकी यह शिक्षा है कि अच्छे कर्म्म करो जिससे सदैवके लिये स्वर्गमें जाओ जहां दुःखका लेश मात्र भी नहीं है। प्रथम तो यही विवादास्पद है कि मनुष्य कदापि एक दशा में रहना स्वीकार नहीं कर सकता है? यदि इस को नित्य सुख प्राप्त हो जावे तो वह प्रसन्नता इस को उसी प्रकार दुःखदाई हो जायगी जिस प्रकार बनी इसराईल 'मूसाके अनुयायी लोगों' के लिये 'मन' 'एक खानेका पदार्थ जो बनी इसराल के लिये आकाश से गिरता था' तथा बटेर हो गई, जिनके बदले उन्होंने ईश्वर से लहसन पियाज मौंठ तथा मूंगकी दाल मांगी! स्वर्ग वासी

लोग जब वहां के अच्छे २ भोजन खाते २ थकजावेंगे तो उन को नर्क की आकांक्षा करनी पड़ेगी, विशेष कर जब कि इस स्वर्ग में निम्द पदार्थ होंगे !

सी० १ सू० बकर आ० ८१ ॥

३६—कुरानकी यह शिक्षा है कि स्वर्ग में पीने के लिये शराब तथा खानेके लिये कबाब मिलंगे। वाह ! शराब तथा कबाब का क्या अच्छा जोड़ मिलाया है ! भला पशु जो वध किये जावेंगे उन का रक्त कहां गिरेगा ! यदि बिनाबध किए ही पशु पक्षि आदि भून लिये जावेंगे तो क्या वह 'हराम' त्याज्य न होंगे ! शोक है कि मेरे कितने ही भाई केवल शराबके प्यालों तथा पशु पक्षियों के मांस के लिये नुमाज रोजे हज तथा जकात 'दान' आदि कार्य करनेका कष्ट उठा रहे हैं।

सो० २७ सू- ह्राकआ आ- १८-२१

(३७) कुरानकी यह शिक्षा है कि स्वर्ग में रेशमी कपड़े पहिननेको मिलेंगे। पाठकगण रेशम के साथ आपके सम्मुख शीघ्र ही रेशम के कीड़ों, शहतूतके वृक्षों तथा कपड़ा बुन्ने की कलोंका चित्र आसकता है, इतना सामान स्वर्ग में कहां से आवेगा और इतने रेशमी कपड़े कौन बुनेगा क्या खुदा बुनेगा ? यदि नहीं तो स्वर्ग के कुछ मनुष्य बुनेंगे ? यदि हां ! तो फिर वहां भी उसको साधारण मजदूरों की भांति सेवा करनी पड़ेगी। विशेषता क्या हुई ? शोक है मेरे भाई रेशमी कीड़ों केथूक आदि से बने हुये कपड़ों पर आशिक होकर कितने धोके में फंस रहे हैं !

सी २६ सू० दहर आ १२-१३ ॥

३८- कुरानकी यह शिक्षा है कि स्वर्गमें दूध तथा शहदकी

नहरें होंगी। भला यदि दूध और शहदकी नहरें होंगी तो दूध के लिये भैंसों तथा शहदके लिये मक्खियोंकी भी आवश्यकता पड़ सकती है, जो एक साधारण बात है।

सी० २६ सू० मोहम्मद आ० १६

३६—कुरातके भाष्यकारोंने तो यहां तक गप्प हांकी है कि जो मनुष्य एक बार 'कौसरा' तथा 'तसनीम' 'स्वर्गको नहरों' से पानी पी लेगा, उसको फिर कभी प्यास नहीं लगेगी। यदि प्यास नहीं लगेगी तो फिर नहरोंके रखनेसे क्या लाभ? यदि यह कहा जावे कि स्नानके लिये तो कौनसा बुद्धिमान् पुरुष है जो शरबत, शहद तथा दूधसे स्नान करेगा! शोक है कि नहरोंका पानी पीनेके लिये भलाई कीजावे।

४०—कुरानको यह शिक्षा है कि स्वर्गमें निवास करने वालों को सोने तथा चांदीके कंगम पहनाये जावेंगे भला यह कौनसी सभ्यता है कि स्त्रियोंका आभूषण 'गहना' पुरुष पहनने लगें।

सी० १५ सू० कहफ आ० ३२

भला बिचारिये तो कि यदि पढ़ा लिखा बीए० एम० ए० अथवा कोई मौलवी साहिब हो कगनोंकी जोड़ी पहन कर बाजार में फिरें जो उसको कितनी लज्जा आवेगी और लोग उसका कितना ठठोल मचावेंगे क्या स्वर्गमें जानेसे यह लज्जा जाती रहेगी? और क्या हमारे इस समयके बड़े २ सुधारक गण जो आभूषण पहननेसे कतराते हैं, वहां होजड़ों तथा स्त्रियों की भांति कंगन पहन कर फिरा करेंगे कंगन बनाने के लिये सोना चांदी सुनार कोयला तथा भट्ठी आदि की भी आवश्यक्ता पड़ेगी वा खुदा स्वयं बनाकर दे दिया करेगा कितने ही मेरे भाई सोने

चांदी के कंगन पहनने के लिये नमाज रोजे हज तथा जकात आदि करते हैं। शोक का स्थल है कि कंगनों को जोड़ी के लिये सेवा की जावे!

(४१) कुरानकी यह शिक्षा है कि स्वर्ग में लोगोंको गोरी कारी युवा तथा काली आँखों वाली स्त्रियां मिलेंगी। उपस्थित गण जिस प्रयोजन के लिये यह होंगी वह आप स्वयम् ही समझ सकते हैं! ब्रह्मचारी इस प्रकार अश्लील बातों को मुंह पर लाना भी महान पाप समझता है! शोक! शोक!! शत शोक!!! उत्तम हो कि स्वर्ग के स्थान में लाहौर का अनारकली बाजार (भले मानस आदमियों को उससे निकालकर) रख दिया जावे छी! छी!! नमाज रोजे और अन्य कार्य जिस ओर बह रहे हैं और क्या पदार्थ (सौदा) क्रय कर रहे हैं! यदि मैं अपने भाइयों की ऐसी शिक्षा पर चार २ आंसू बहाऊं और इनको स्वर्ग के दुर्व्यसनों से बचाने के लिये रोदन करूं तो यह मेरा मुख्य कर्त्तव्य है!

सी० २७ सू० रहमान आ. ५५-७२

(४२) कुरानकी यह शिक्षा है कि स्वर्ग वालों को लड़के भी मिलेंगे जो बिना डाढ़ी मूंछ के युवा होंगे। मेरी समझ में नहीं आता कि लड़कों की वहां क्या आवश्यकता है? लड़के किनको मिलेंगे? पुरुषों को अथवा स्त्रियों को? न्याय तो यही चाहता है कि जब एक २ पुरुष को बहुत सी हूरें मिलेंगी तो एक २ स्त्री को बहुत से युवा लड़के मिलने चाहियें। परन्तु कुरान से इसका निबटारा नहीं है। बुद्धिमान तथा न्यायप्रिय पुरुष स्वयम् इसका निबटारा कर सकते हैं। मैं खुदासे प्रार्थी हूं कि वह सबको उपरोक्त स्वर्ग से बचावें।

सी. २९ सू. दहर आ. १९

उपस्थित गण! मेरी हार्दिक प्रार्थनाका साथ दें वरन् एक पग आगे बढ़ावें। मैं आपको बताऊंगा कि उपरोक्त स्वर्गके अतिरिक्त कुरानकी शिक्षा मनुष्यको दयालु कदापि नहीं बना सकती क्योंकि जहां मांस भक्षण और बलि प्रदान है वहां दया का भाव कहां? और इस कारण आत्मिक शिक्षाका भी अभाव है। कुरानकी शिक्षाओंमें से किसीने मेरे कोमल हृदय पर इतनी चोट नहीं पहुंचाई जितनी कि मांस भक्षण तथा बलि प्रदानकी शिक्षा ने। आपमें से कोई पुरुष मुझसे प्रश्न करें कि संसारमें आत्माका नष्ट करने वाला सबसे बड़ा पाप कौन है तो मैं शीघ्र उत्तर दे दूंगा कि मांस भक्षण महान् पाप है; जो आत्मोन्नतिके मार्गमें सबसे बढ़कर रोक बनता है। जिस हृदयके पास ही पेटमें मांसके टुकड़े पड़े हैं और हड्डियोंका रस भरा पड़ा है, वहां आत्मिक तेज कहां? मांसका टुकडा भीतर गया और आत्मिक शिक्षाका भाव बाहर हुआ! यदि कोई पुरुष मेरे पास आकर कहे कि अमुक स्थान पर सुईके छेदमें से हाथी निकल गया तो कदाचित् मैं सत्य मान लूं, परन्तु यदि कोई आकर यह कहे कि अमुक स्थान पर एक मांस भक्षकने औलिया अल्लाह (ईश्वर प्राप्तिका आनन्द अनुभव करने वाला) अथवा पैगम्बर होकर, आत्माके मर्मको जान लिया तो मैं इसको कदापि स्वीकार न करूंगा। पत्थर है वह हृदय जो निरपराधी बकरीकी बिल-बिलाहटको जो वह हनन किये जानेके समय करती है सुन कर पिघल नहीं जाता! वहां आत्मिक शिक्षा का बीज कदापि नहीं उग सकता। मेरा हृदय दुःखसे भर आता है जब कि मैं एक निरपराधिनी तथा जिह्वा रहित बकरी की आंसू भरी आंखोंको

कसाईकी छुरीपर लगी हुई देखता हूं! जब कि मैं कसाईको दोनों घुटने बकरीके तड़पते हुये शरीर पर रक्खे हुये और गले पर छुरी चलाते हुये देखता हूं। क्या लोहेकी शलाखाओं में हरे पत्ते लग सकते हैं? क्या कसाई और मांस भक्षक पुरुषका हृदय कभी आत्मिक शिक्षा की हरियालीसे हरा भरा हो सकता है? नहीं कदापि नहीं। यदि कोई मांस भक्षक आत्मिक शिक्षाका दम भरे तो उसको कह देना चाहिये कि सिंह तथा वृक (भेड़िये) आत्मिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते।

दया जिसको धर्मका मूल कहा गया है हड्डी चूसने वालों के हृदय से उतनी दूर रहती है जितनी दूर सूर्यसे पृथ्वी। सूर्य की किरणें पृथ्वी पर पड़ सकती हैं परन्तु दयाकी किरण हड्डी चूसने वालेके हृदयसे सदैव दूर रहती हैं। इस लिये वह दयावान अथवा धार्मिक कदापि नहीं हो सकता। मुझे हार्दिक शोकके साथ कहना पड़ता है कि कुरान मांस भक्षण तथा बलिप्रदान की शिक्षा देता है। मेरा हृदय रोदन करता है जब कि मैं बकराके कण्ठ और कसाईकी छूरीको स्वर्ग प्राप्तिके लिये कुरानके पृष्ठोंमें लिखा हुआ पाता हूं।

(४३) कुरानकी शिक्षा है कि खुदाके नाम पर पशु बध करो उसका मांस आप खाओ और अन्योंको खिलाओ कुरानके कुछ भाष्यकारोंने तो यहां तक भी वर्णन किया है कि जो पुरुष इस संसारमें पशुओंका बलिप्रदान करते हैं वह प्रलयके दिन उनके कन्धों पर चढ़ कर वैतरणी को इस प्रकार पार कर जावेंगे जिस प्रकार बिजली। ईदुज्जुहा [मुसलमानी त्योहार] के दिन किसी मसजिद में जाकर खुतबा [उपदेश] सुनियेः—"भाइयो।

धन्यवाद दो कि ईश्वर ने तुमसे दुम्बा भेड़ बकरी आदि कीही कुरबानी लेनी स्वीकार की है। यदि इस्माईल का बध हो जाता तो आज प्रत्येक मुसलमानको अपने बड़े बेटेका बलि प्रदान करना पड़ता" इत्यादि २ लम्बी चौड़ी कहानी सुनाई जाती है। सुनने वालोंको भी धन्यवाद है! परन्तु आप किंचित विचार तो करिये कि पशुओंका हनन करना कहां और मोक्ष कहां? शोक! महा शोक! पशुवृत्ति तथा दुर्व्यसनोंके वर्षोंके पाले हुये भीतरके बकरे आत्मिक शिक्षाके भावको हरियालीको दिन रात चर रहे हैं, उनका तो हनन न किया जावे, किंतु निरपराधी घास पात खाने वाले भेड़, बकरी तथा गाय आदि लाभदायक पशुओंका बध करके चित्तकी वृत्तियोंको और भी दुर्व्यसनोंकी ओर लगाया जावे।

ईश्वर करे कि मुसलमानो, तुम सच्चा बलिप्रदान कर सको। भेड़ बकरी, गाय तथा ऊंट आदिके हनन करनेके स्थानमें तुम अपने मनकी कुत्सित चञ्चल वृत्तियोंका हनन करके ईश्वरके न्यायालयमें उपस्थित होकर ऋषियों तथा मुनियोंकी प्रतिष्ठा प्राप्त कर सको। जब कि ईश्वर मांस चर्म, तथा रक्त पान नहीं करता तो फिर रक्त क्यों बहाते हो? हृदयकी पवित्रताको उसके सम्मुख भेंट करो।

सी. १७ सू. हज्ज आ. ३४-३७।

(४४) कुरानकी यह शिक्षा है कि मरे हुये सूकर तथा रक्त अभक्ष्य हैं। परन्तु विचार करिये कि मरा हुआ किसे कहते हैं? वह जिसमें प्राण निकल गये हों, चाहे लाठी मारनेसे चाहे छुरी के आघातसे। शैतानका नाम लेकर हनन किया गया हो अ-

थवा ईश्वरका नाम लेनेसे काटा गया हो, परन्तु मुरदार वह है जिसमें अब प्राण नहीं हैं। क्या ईश्वरका नाम लेनेसे यदि एक पशु वध किया जावे तो वह मुरदार अथवा प्राणरहित न हो जावेगा? फिर वह हराम क्यों न हुआ? फिर देखिये कि रक्त अभक्ष्य है। मैं आपसे पूछता हूं कि यदि रक्त अभक्ष्य है तो मांस क्यों भक्ष्य हो गया? वह भी सर्वथा अभक्ष्य हुआ क्योंकि वह भी तो रक्त ही से बनता है। किंचित् ध्यान दीजिये मादाके गर्भाशयमें वीर्य्य उसके रक्तसे पलता है उसकी सम्पूर्ण हड्डी, पसली, मांस त्वचा, रक्त एक २ बिन्दुसे बनती है और सम्पूर्ण शरीर रक्त ही से पलता है हड्डी रक्तसे बनती है त्वचा तथा माँस भी रक्तसे, चरबी भी रक्तसे और स्वच्छ रक्तसे। यह नहीं कि खानेमें हड्डी तथा चरबी आदि पृथक २ उपस्थित होती हैं, पेटमें जाकर हड्डी हड्डीके साथ और .माँस मांसके साथ जा मिलता हो; नहीं वरन् पहले रक्त बनता है, फिर रक्तसे अन्य अवयव बनते हैं। यदि रक्त ही अभक्ष्य होगया तो मांस उससे भी बढ़कर अभक्ष्य हुआ क्योंकि वह रक्तका जमा हुआ सत है। परन्तु मेरे भाइयोंको यह बात कौन समझावे? वहां तो पक्षपात का डेरा जमा हुआ है, किसीको शक्ति क्या कि वह उसके विपरीत कुछ कह सके? फिर पूछिये कि सुअर क्यों अभक्ष्य है? क्या इस लिये कि वह अपवित्र भक्षी है? यदि यही कारण है तो मुरगे, मुरगियां तथा भेड़ें भी अभक्ष्य होनी चाहिये जो अपवित्र खाने वाले हैं। अथवा इस लिये कि वह अधिक मैथुनप्रिय है—उसके मांससे काम शक्ति अधिक उत्पन्न होती है? तो फिर मुरगे तथा बकरोंसे बढ़कर कौनसे पशु अधिक काम प्रिय हैं? वे

भी अभक्ष्य होने चाहिये। मुझे कोई कारण प्रतीता नहीं होता कि सुअर क्यों अभक्ष्य समझा जावे तथा अन्य पशु क्यों भक्ष्य समझे जावें।

सी. ६ सू. मायदा आ. ४

(४५) कुरानकी शिक्षा है कि रुधिर अभक्ष्य है। यहां तक कि यदि उसकी बून्द कपड़े पर लग जावे तो वह अपवित्र हो जाता है। तो क्या जमा हुआ रुधिर अर्थात् मांस खानेसे देह आत्मा अपवित्र नहीं होंगे? शोक है कि शरीर और आत्माको कपड़ेसे भी निकृष्ट समझा जावे।

सी. ६ स. मायदा ४।

(४६) कुरानकी शिक्षा है कि बेतअल्लाह अर्थात् कावेके घर जो पवित्र स्थान माना गया है, रुधिर मत गिराओ। क्या खुदा का घर अरबके एक कोनेकी चतुर्दिक सीमा तक ही है और शेष संसार शैतानका घर है? कोई कारण विदित नहीं होता कि इस घरमें तो लोहू गिराना वर्जित किया जावे और दूसरे स्थानोंमें उचित समझा जावे। इससे तो यह सिद्ध होता है कि खुदा एक स्थानीय है और अरबके एक कोनेमें अपना घर रखता है। शोक है! उन मनुष्योंकी बुद्धि पर जो सारे संसारको ईश्वरका घर न समझ कर पशुओंके रुधिरसे उसको अपवित्र कर रहे हैं। वह दिन कब आयेगा जब कि निर्दोष भेड़ बकरी के बच्चों का शोक जनक शब्द जो वह बध होते समय निकालते हैं मेरे भाइयों के हृदयको इस प्रकार क्लेशित और अधीर कर देगा, जैसा कि उनके एक प्यारे बच्चेकी बिलबिलाहट, जिसका गला ईश्वर न करे कोई छुरीसे काट रहा हो।

सी० ७ सू० मायदा आ० ६७

(४७) कुरानकी शिक्षा है कि अहरामके दिनोंमें आखेट करना और किसी पशुका मारना त्याज्य है। अहराम उन दिनों को कहते हैं जब कि हाजी लोग खुदाके घरकी यात्रा करनेके लिये दृढ़ प्रतिज्ञा करते हैं, परन्तु क्या केवल अरबी मासकी विशेष तिथि नियत हो सकती है जब कि मनुष्यको निर्दोष हो जाना उचित है। यदि हां तो मानना पड़ेगा कि खुदा भी फसली बटेरोंकी नांई एक नियत समय पर अपने घरमें उपस्थित होता है और शेष दिनोंमें लुप्त रहता है। परन्तु ऐसा नहीं। ईश्वर प्रत्येक समय और स्थान में उपस्थित रहता है। जो पक्का हाजी है, वह सर्वदा निर्दोष जीवन व्यतीत करता है। और कभी भी पशुओंका रुधिर गिराकर पृथिवीको अपवित्र नहीं करता और कभी भी निरपराध पशुओंका गला काट कर अपने चित्तसे दया भावको जो धर्मका मूल है हानि नहीं पहुंचाता। वह सदैव ही अहराममें रहता है और इसी लिये अरबी हाजीसे बढ़कर कि जिसका अहराम थोड़े दिनोंके लिये ही होता है, अधिक प्रतिष्ठाका भागी होता है। ईश्वर करे कि मुसलमानोंमें ऐसे निर्दोष हाजी उत्पन्न हों, केवल हाजी ही उत्पन्न न हों किंतु बुद्धिमान् और ब्रह्मज्ञानी लोग उत्पन्न हों! जो उपरोक्त बातोंको छोड़नेके अतिरिक्त निम्न लिखित सृष्टि विरुद्ध बातोंको गहरी दृष्टिसे देखें और उनसे चित्त हटावें। उपस्थित गण! मैं कुरानी शिक्षाकी बातोंमेंसे कुछ बातें कि जिन पर सभ्य मनुष्य हंसी उड़ाते हैं आप के सम्मुख उपस्थित करता हूं।

सी० ७ सू० मायदा आ० ९६—९८

(४८) कुरानकी शिक्षा है कि महात्मा मूसाकी लाठीका

खुदाने बड़ा भारी सांप बना दिया। जिसको देख कर फरऊन, जो एक नास्तिक राजा था, डर गया। उसने समझा कि मूसा एक जादूगर है। सब जादूगरोंको उपस्थित होनेकी आज्ञा दी। जादूगरोंने लाठियों और रस्सियोंके सांप बना दिये। मूसा भी यह दृश्य देखकर डर गया। खुदा ने उसी समय फ़रिश्ता भेजा कि मत डरे, तू जीत जायगा, अपनी लाठी पृथिवी पर फैंक दे। निदान मूसाने खुदाकी आज्ञानुसार अपना डण्डा पृथिवी पर दे मारा, फिर वह "फ़ैजा हिया सोबानुन मुबीन" देखते देखते ही एक भारी अजगर बन गया और "फ़ैज़ा हिया तलक़ फ़ौमा या फिकून" जादूगरोंके डण्डों और रस्सोंसे बनाये हुये सब सांपोंको खा गया। भाष्यकारोंने तो यहां तक गप्प हांकी है कि यह सब डण्डे और रस्से ४० गदहों पर लाद कर तमाशा घरमें लाये गये थे, और कई सौ मन तोलमें थे। मूसाकी लाठीने कई सौ मन लाठियोंको खाकर डकार तक भी न ली और जुगाली तक भी न की! कहा गया है कि चारों ओर देखने वाले जो एकत्रित थे वे इस अद्भुत अजगरको देखकर ऐसे अन्धाधुन्ध भागे कि इस गड़बड़में २५००० मनुष्य पावोंके तले रौंदे जाकर मारे गये। मूसाने जब देखा कि यह तो बड़ा अन्याय हुआ, इतनी ईश्वरकी प्रजा योंही मारी गई, तो उन्होंने तुरन्त सांपको पकड़ लिया और वह वैसे ही लाठी बन गई। आश्चर्यका स्थान है कि उस लाठी को तोल कई सौ मन रस्से और डण्डे खा कर भी उतना ही रहा जितना कि पहले था और उसका पेट तनिक भी बड़ा न हुआ और न कहीं वह खुराक दृष्टि पड़ी। सच है मोजज़ा (अद्भुत क्रिया) हो तो ऐसा ही हो, और उसको मानने वाले भी हों तो

कुरान वाले ही हों! जो पहिले सृष्टि नियम और बुद्धिको पागल-खानेके दारोगोंके हाथ बन्धक कर दें। एक उन्नीसवीं शताब्दी के रिफारमर मुसलमाने कुरानको ऐसे मिथ्या बातों पर कलई तो चढ़ाई परन्तु वृथा मुलम्मा करनेसे यथार्थको नहीं छिपा सकते। ईश्वर करे मेरे भाइयोंकी आँखें खुलें और इस प्रकारकी असत्य बातोंको वह देख सकें।

सी. ९ सू. ऐराफ आ. आ. १७-११७

(४९) कुरानकी शिक्षा है कि मूसाने उपरोक्त लाठी मार कर समुद्र को फाड़ दिया और उसमें बारह रास्ते बन गये। मूसाकी सब सेना उनमें होकर चली गई और जब फरउन की सेना निकलने लगी तो समुद्र मिल गया और वे सब डूब गये और मूसा बनीइसराईल सहित बच निकले। वाह! क्या विचित्र लाठी थी, जो मूसा के साथ एकान्त में बातें करती थी, रात को पहरा देती थी, दिन को छत्रीका काम देती थी और इच्छानुसार छोटी बड़ी हो जाती थी! तभी तो उसने समुद्र को फाड़ दिया, परन्तु ज्ञात नहीं कि महात्मा मूसाके मरने के पश्चात् वह लाठी कहां चली गई। निःसन्देह ऐसा पदार्थ अजायब घरमें रक्खा जाना चाहिये। शोक है! ऐसी इलहामी गप्पों पर।

सी० १९ सू० शुअरा आ० ६३-६६

(५०) कुरानकी शिक्षा है कि हजरत मूसा ने डंडा मारकर पत्थरमेंसे बारह श्रोत निकाल दिये और बनीइसराईलने अच्छे प्रकार तृप्त होकर पानी पिया। बुद्धिमान् भाष्यकार महाशय तो इस गप्प को यहाँ तक हाँकते हैं कि जब महात्मा मूसा यथन नामक नगर विशेष में पधारे तो मार्ग में उनको एक छोटासा पत्थर

मिला उसने हजरत मूसासे वार्तालाप किया और कहा कि मुझे उठाले मैं किसी कठिन समय में काम आऊंगा। निदान महात्मा मूसाने वह पत्थर उठा कर अपने तोबड़े में डाल लिया। जब बनीइसराईल ने पानी मांगा तो खुदा ने कहा कि वह पत्थर जो तेरे तोबड़े में है उसको निकाल और लाठी से मार; उसमें से बारह श्रोत निकल आवेंगे। निदान ऐसाही हुआ। पुराण ने तो शिवजी के शिर में से गंगा बहादी, परन्तु कुरान ने अपने बड़े भाई से तनिक आगे पग बढ़ाया और पत्थर में से बारह धारा निकाल दीं। शोक है संसार की अविद्या पर।

सी० १ सू० बकर आ० ५६।

(५१) कुरानकी शिक्षा है कि जब बनीइसराईल सत मार्ग विरहित होगये और खुदा की बातोंको भूल गये तो खुदा ने पहाड़ उठा लिया और उनसे कहा कि या तो मेरी बातों को मानलो नहीं तो अभी पहाड़ तुम्हारे शिर पर गिरता है। बड़े आश्चर्यकी बात है कि खुदा ने पहाड़ उठाने का कष्ट सहा! यह सम्भव जान पड़ता है कि पहाड़ पुराण से कुरान में गया, क्योंकि महाराजा श्रीकृष्ण का अंगुली पर पहाड़ उठाना भी कुछ अभिप्राय रखता है! हाय विद्या और अन्धकार!'

सो० १ सू० बकर आ० ६२।

(५२) कुरानकी शिक्षा है कि महात्मा सुलेमान एक दिन मैदानमें से जा रहे थे, वहांकी चींटियोंने जब उनकी सेनाको आते देखा तो उनमेंसे एक चींटी बोली कि भाइयो! अपने बिल में घुस जाओ। ऐसा न हो सुलेमान और उसकी सेना तुमको पांवके नीचे कुचल डाले। सुलेमान इस बातको सुनकर बहुत

हंसा और उसने ईश्वरका धन्यवाद किया कि चींटियोंकी बात-चीत भी सुन सकते थे। महाशयो, डारविन जैसे मनुष्योंने मक्खियों और चींटियोंके पीछे आयु व्यतीत कर दी, पर उनकी भाषाको न समझ सके। शोक है ऐसी गढ़न्त पर! तीक्ष्ण बुद्धि भाष्यकारोंने तो यहां तक बात बढ़ाई है कि इस चींटिका शरीर भेड़के समान था और उसका नाम 'मन्दजा' था और सुलेमानने उसका शब्द तीन कोसके अन्तरसे सुन लिया। बातचीत करते समय सुलेमानने बीबी चींटीसे पूछा कि तेरी सेना कितनी है? चींटी बोली कि मेरे पास चार सहस्र योद्धा और प्रत्येक योद्धा के आधीन चालीस चालीस सहस्र प्रधान और प्रत्येक प्रधानके आधीन चालीस सहस्र चींटियां हैं। सारांश यह कि सुलेमान और बीबी चींटीका बड़ा आश्चर्य जनक सम्भाषण है जो बच्चोंको बहलानेके लिये मनोरञ्जक है। शोक है! भाष्यकारोंकी बुद्धि पर कि चींटियोंकी कहानियोंको ईश्वरकी ओरसे कहकर ईश्वरीय ज्ञानका नाम बदनाम करते हैं। ईश्वर! तू प्रकाश भेज और भाइयोंको सीधा स्वर्ग दिखा।

सी. १६ सू० नमल आ० १७-१६

(५३) कुरानको शिक्षा है कि हज़रत सुलेमान जन्तुओंकी भाषा जानते थे। जैसे हुदहुद वा चक्की राहे पक्षीकी जो कुरानमें कहानी है वह विचित्र है। हुदहुदकी सुलेमानके साथ बात चीत, चक्की राहेका रानीकी ओरसे पत्र ले जाना और वहांसे उत्तर लाना, रानीका सुलेमानके समीप आना इत्यादि एक मनोरंजक कहानी और ईश्वरीय ज्ञानकी कहानी है। कदाचित इसी कारण से लोग हुदहुदको सुलेमानका पुत्र कहते हैं। परन्तु क्या आज

कल वह अपनी सुलेमानी भाषा भूल गया है। शोक है! ऐसी गप्पोंके लिये जबराईलके पंख थकाये जावें और जो लोग इनको ईश्वरकी ओरसे न समझें उनको काफ़िर कहा जावे। आश्चर्यकी बात है कि अविद्याके समयमें तो लोग मनगढन्त बातोंपर विश्वास कर लेते थे, परन्तु आज कल सभ्य शिक्षित बी० ए० और एम० ए० की डिगरी प्राप्त स्कूलों और कालिजोंमें चौदह पन्द्रह वर्ष तक विद्या प्राप्त बुद्धिमान् मुसलमान भी बहुधा इनका आखेट बन रहे हैं।

सी. १० सू. नमल आ. १६-२२

(५४) कुरानकी शिक्षा है कि वायु सुलेमानकी आज्ञासे चलता था और उनके सिंहासनको एक स्थानसे दूसरे स्थान पर पहुंचा देता था। सम्भव है कि कोई कुरानी इस बातसे सिद्ध करनेकी चेष्टा करे कि देखिये महाशय! कुरान तो साइन्सका घर है। यूरोप वासियोंने तो अब बेलून यन्त्र बनाया है, परन्तु कुरानमें उसका वर्णन पहिले ही से था। सुलेमान बेलून पर चढ़ा करते थे। सम्भव है कि कुरानमेंसे रेल और तार भी निकल आवें। परन्तु सुलेमानका वायुको आज्ञानुकूल चलाना अत्यन्त ही आश्चर्यकी बात है। वायु किस प्रकार उनकी आज्ञाको सुनता होगा। इसी बातको लेकर कदाचित् एक परिहासकने वायु और मच्छरोंका अभियोग सुलेमानके न्यायालयमें आना बतलाया है।

सी० २३ सू० सद आ० ३६

(५५) कुरानकी शिक्षा है कि खुदा की वही (स्वर्गीय आज्ञा) केवल पैगम्बरों के पास ही नहीं आई किन्तु वह मधु मक्खियों

के पास भी आई। निदान मक्खियों का मधु एकत्रित करना और घर बनाना इसी वही के अनुसार है कि जिस वही के अनुसार कुरान है। इसके अनुसार तो फिर पक्षियों, अबाबीलों, कौवों, कबूतरों के घोंसले भी खुदा की वही के द्वारा ही बनते हैं परन्तु जबराईल किस किस के पास पहुंचता होगा! राज और अन्य शिल्पकार भी तो फिर खुदा की वहीके अनुसार ही सब काम करते होंगे। परन्तु जबराईल का आकार वे क्यों नहीं देख सकते और क्यों नहीं वे इलहाम का दम भरते? इस लिये कि वे बुद्धिमान् हैं।

सो० १४ सू० नहल आ० ६८-६९

(५६) कुरानको शिक्षा है कि अबाबीलों ने कंकरियें मारकर हाथियों और मनुष्यों का खलयान कर दिया और सब सेना को नष्ट कर दिया। निःसन्देह यदि यह गप्प कुछ भी बढ़कर न हो तो वह मोजजा नहीं समझी जा सक्ती। कहां हाथी और कहां अबाबील एक कीड़े खाने वाला पक्षी! भाष्यकार महाशयोंने अपनी तीक्ष्ण बुद्धिसे अच्छा काम लिया है। कहते हैं कि एक एक अबाबील तीन तीन कंकड़ियां लिये हुए था दो दोनों पंजोंमें और एक मुंह में। प्रत्येक कंकड़ी पर मारे जाने वालेका नाम लिखा हुआ था। उसीके वह लगती थी, दूसरेके नहीं, यहां तक कि जो मनुष्य रणभूमिसे भाग गये थे उनके नामकी कंकड़ी उनके पीछे गई और जहां वे ठहरे वहां जाकर शिर पर लगी और नष्ट कर दिये। शोक! अविद्याके समय के उगे हुए वृक्ष अब तक हरे हैं!!

सी. ३० सू. फील आ. १-५

(५७) कुरानकी शिक्षा है कि खुदाने नास्तिकोंको आस्तिक

बनानेके लिये एक विशेष ऊंटनी उत्पन्न की। मूर्ख लोग तो यहाँ तक गप्प हांकते हैं कि वह ऊंटनी एक पत्थरमेंसे उत्पन्न हुई और उत्पन्न होनेके साथ ही उसने बच्चा भी दे दिया। फिर काफिरोंने उस ऊंटनीको मार डाला और उन पर दुःख पड़ा। भाष्यकार लिखते हैं कि उस ऊंटनीका बच्चा डर कर पहाड़की ओर भाग गया और वहां तीन बार चिल्लाया और फिर आकाशकी ओर उड़ गया। निदान प्रलयके दिन यह ऊंटनी बच्चे सहित बहिश्तमें चरे फिरेगी। शोक है ऐसी मूर्खता पर और ऐसी गप्पों पर!

सी० १५ सू० इस्राईल आ० ५९।

(५८) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने बनइसराईलको उनके दुष्टाचारके कारण बिजली द्वारा नष्ट कर दिया। भाष्यकार कहते हैं कि महात्मा मूसा इस बातको देखकर रो पड़े कि लोग मुझे क्या कहेंगे। इसलिये खुदाने उन सबको फिर जीवित कर दिया। विदित होता है कि यह किसी दूसरी बातोंकी भांति योंही गप्प हांक दी है नहीं तो बिजलीके साथ नष्ट हो जाना क्या अर्थ रखता है?

सा० सू० बकर आ० ५४-५५।

(५९) कुरानकी शिक्षा है कि जब बनीइसराईल मिश्र देश से निकल कर भूखों मरने लगा तो खुदाने उनके लिये मन (हलवा विशेष) और सलवा (पटेरकी भांतिका पक्षी) आकाश से भेजे। भाष्यकार कहते हैं कि सलवा एक प्रकारका पक्षी होता था जो घास पर आकर बैठता और चेचहानेके पश्चात् स्वयं ही भुनकर नीचे गिर पड़ता था उसमें न नस होती, न

रुधिर, न हड्डी। तीक्ष्ण बुद्धि भाष्यकारसे पूछा जाय कि पक्षी स्वयं भुनकर नीचे गिर पड़ता था और यदि उनमें नस, रुधिर, हड्डी आदि नहीं थी तो वे उड़ने वाले पक्षी कैसे हो गये! यह सब बच्चोंको बहलानेके लिये कहानियां हैं जिनको मैं कदापि स्वीकार नहीं कर सकता!

सी० १ सू० वकर आ० ५६।

(६०) कुरान की शिक्षा है कि बनीइसराईलको धूप ने सताया तो खुदाने उस पर बादल भेज दिया और वह छप्पर का काम देने लगा। कुछ लोग यहाँ तक अनर्थ करते हैं कि वह बादल बनीइसराईलके साथ २ शिरों पर चला करता था और छांह रखता था। मैं इसको स्वीकार नहीं कर सकता।

सी०१ सू० वकर आ० ५६।

(६१) कुरानकी शिक्षा है कि बनोइसराईलको कहा गया कि गायको बध करो। लोग बड़े चकराये। मूसासे कहने लगे कि तुम हमारे साथ ठठोल करते हो। उनके चकरानेका कारण यह था कि उनमेंसे एक मनुष्यको किसीने मार डाला। मृतकको मारने वाला नहीं मिलता था। इस लिये खुदाने आज्ञा दी कि गाय बध करके उसका एक टुकड़ा मृतकके मारो। मृतक जीवित हो जायगा और स्वयं अपने मारने वालेका नाम बता देगा। निदान खुदाके साथ बहुतसे तर्क वितर्कके पश्चात् गायके रङ्ग आयु परिमाण आदिका निणय हुआ और गाय बध की गई। भाष्यकार महाशय इस बातको पुष्ट करनेके लिये लिखते हैं कि गायकी पूंछ लेकर मृतकके मारी गई। वह तत्क्षण जीवित हो गया और मारने वालोंका नाम बताकर तुरन्त ही मर गया। देखिये गाय

की पूंछमें मृतको जीवित करनेकी सामर्थ्य है! इसलिये यदि कुछ पौराणिक हिन्दू गायकी पूंछ पकड़ कर मुक्ति पा लेना मान लें तो क्या आश्चर्य है? शोक है कि कुरान जैसा उम्मुल किताब (किताबकी माता अर्थात् मूल) ईश्वरीय होनेके स्थानमें इस प्रकारकी गप्पोंसे उम्मुलगप्पात (अर्थात् गप्पोंकी माता व मूल) बन रहा है।

सो० १ सू० बकर आ० ६६-७२।

(६२) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने फरऊनके लोगों पर टिड्डी मेंडक चीचही आदि का दुःख उतारा और फरऊनियों के घरोंको तूफानक (रौ) में डबो दिया। भाष्यकार लिखते हैं कि फरऊनके घरोंमें पानी भर गया, परन्तु इसराईलियों के घर नीचे होने पर भी सूखे रहे और फिर खुदाने नील नदीका सब पानी लोहू कर दिया। जब फरऊनी लोग पीते, तब तो लोहू हो जाता और जब इसराईली पीते तब वैसे का वैसे ही पानी रहता। मैं पूछता हूं कि ऐसी मिथ्या बातों की क्या आवश्यक्ता थी? सच है हबशियों के हाथ में गोरा मनुष्य जा फंसा, उन्होंने देखा कि यह तो हम से सर्वथा विलक्षण है, मुंह पर स्याही मलकर अपने जैसा कर लिया! शोक है! भाष्यकारों की बुद्धि पर और आश्चर्य है, ऐसे इलहामों पर कि जिन को मैं स्वीकार करने में असमर्थ हूं।

सी० ९ सू० एराफ आ० ३-१३

(६३) कुरानकी शिक्षा है कि जब मूसा कोह तूर पर खुदा से बातें करनेमें निमग्न था तो बनी इसराईल ने एक बछड़े की पूजा आरम्भ करदी, जो सोने चांदी के गहनों को ढालकर बना-

या गया था और वह गाय की भांति बोला करता था। आश्चर्य है कि धातु से बना हुआ बछड़ा गाय को नांई बोले। परन्तु उपस्थित गण, कुछ तो स्वयं खुदा ने और कुछ भाष्यकारों ने इस बात को स्पष्ट कर दिया है कि जब बनीइसराईल नील नदीको पार कर रहे थे तो महात्मा जबराईल घोड़े पर सवार होकर उसके आगे आगे चलते थे। एक मनुष्य सामरी नामोने जबराईल को देख लिया और उनके घोड़ेके सुम के नीचे की धूल से एक मुट्ठी भरली। जब उसने मूसा को अनुपस्थिति में सोने चांदी को ढालकर बछड़ा बना लिया तो उसके मुंह में वह मुट्ठी डाल दी। वह उसी समय बोलने लगा और उसका शब्द सुनते ही बनीइसराईल उसके सम्मुख सिजदे में गिर पड़े। ज्ञात होता है कि पूर्वकाल में गाय की पूजा पृथिवी भर पर थी। किन्तु खुदा के कलाम में धातु के बछड़े का जीवित होना और बोलना चालना केवल गप्प है कि जिसको मैं कदापि नहीं मान सकता।

सी० १६ सू० तोबा आ० ८८-९८

(६४)कुरानकी शिक्षा है कि खुदा ने इबराहीम से कहा कि अपना बेटा मेरे नाम पर बलिदान कर। निदान वह बलिदान करने लगे, पर छुरी ने काट न किया और खुदा ने एक दुम्बा जबराईल के हाथ बहिश्त से भेज दिया और कहा कि हे इबराहीम तू बड़ा शूर है, ले इस मेंढ़े को अपने पुत्र के बदले बलिदान कर। भाष्यकारोंने इसको और बढ़ाकर यह लिखा है कि इसमाईल की ग्रीवा तांबे की बन गयी, इस कारण छुरी ने काट न किया। कोई २ कहते हैं कि कट जाती थी और पुनः मिल जाती थी। अब दुम्बा जो बहिश्तसे लाया गया था जो एक समय आ-

दम के पुत्र हाबील ने खुदा के नाम पर बलिदान किया था, वह इस कारण कि बहिश्त में था, अब दुबारा बलिदान किया गया । उसके बड़े २ सींग थे और चालीस वर्ष पर्यन्त बहिश्त की अंगूरी चरता रहा था । मै इन मिथ्या बातोंको नहीं मानता ।

सी० २३ सू. जकात आ. १०२-१०७

(६५) कुरानकी शिक्षा है कि खुदा के पैगम्बर इबराहीम को अग्निमें डाल दिया गया । अग्नि नितान्त ठण्डी होगई । चारों ओर पुष्प खिल पड़े और पानी के स्रोत बहने लगे । आश्चर्य की बात है कि लटीमर और करनामर जैसे ईश्वर भक्त आगमें फेंके गये और वह ठण्डी न हुई । क्या खुदा का स्मरण न रहा था ! और या खुदा का इबराहीम से विशष प्रेम था जो वहां आग के फूल बना दिये और यहां ठण्डी तक न की ? यह सब मूर्खों को विश्वासी बनानेकी बातें हैं । यदि कुरानका खुदा कोई ऐसी लीला दिखा सकता है तो चाहिये कि आज कल किसी मुसलमानको जो ईश्वर प्राप्त मनुष्य और पैगम्बर होकर खुदाके साथ ईसा अथवा मूसाकी नाईं बातें करनेका दम भरता हो, एक लम्बी चौड़ी भट्टीको आगसे भर कर, बीचमें फेंक दिया जावे । यदि आग पुष्प बन जावे तो समझें कि कुरान मोजजे सब सत्य हैं ? बहुधा मूर्ख लोग तो इस मोजजेके यहां तक विश्वासी हैं कि वह आयत "कुलना या नारो कूनी व रदन व सलामन् अला इबराहीम" को पीपलके पत्तों पर लिख कर ज्वरके रोगीको धोकर पिलाते हैं और विश्वास रखते हैं कि इससे बुखार उतर जाता है । शोक है इस मूर्खता पर ।

सी. १७ सू. अम्बिया आ. ६६

(६६) कुरानकी शिक्षा है कि मूसा एक ईश्वर भक्तसे मिलने गया। पता यह कि जहां भुनी हुई मछली जीवित होकर पानीमें चली जावे, वहाँ पर ही वह मनुष्य मिलेगा। बड़ा कष्ट उठाकर मूसा एक स्थानमें पहुंचे। जहां मछली जीवित होकर पानीमें चली गई और इस ईश्वरभक्तसे बातें कीं। मैं पूंछता हूं कि भुनी हुई मछली क्योंकर जीवित रही होगी? विश्वास रहित गप्पोंका नाम ही मोजजा होता है। मैं इस शिक्षाको नहीं मान सकता।

सी. १६ सू. कहफ आ. ६२—६५

(६७) कुरानकी शिक्षा है कि महात्मा ईसा मिट्टीके खिलौने बना कर उन में आत्मा डाल देता था और अपने मित्रोंके सम्मुख ही उनको उड़ा दिया करता था। यह उस का मोजजा था। कुरानी तो यह मान सकते हैं क्योंकि महात्मा ईसा उनके विचारानुसार बिना पिताके उत्पन्न हुए थे इस लिये वह पक्षुओंको भी बिना मा बापके उत्पन्न कर सकते थे, परन्तु मैं इतनी बड़ी गप्पों और सृष्टि नियम विरुद्ध बातों को कदापि नहीं मान सकता!

सी. ३ सू. उमरान् आ. ४८।

(६८) कुरानकी शिक्षा है कि महात्मा ईसा मुर्दोंको जीवित कर देते थे। शोक है जीवित करनेका नुसखा कदाचित भूलसे कुरानमें न लिखा जा सका, नहीं तो मुर्दों पर आज कल भी परीक्षा करके देख लिया जाता। भाष्यकारोंने जो इस पर बुद्धि को दूर रखकर लिखा है, वह विचित्र लिखा है। फिर एक मौलवी साहब कहते हैं कि कुरानकी शिक्षा सृष्टि नियमानुकूल और सच्ची है। भाई यदि सृष्टि नियमानुकूल होती तो मैं उसको

क्यों त्यागता ? यहां तो पुराणोंसे भी बढ़ कर लीला उपस्थित है।

सी. ३ सू. उमरान आ० ४८

(६६) कुरानकी शिक्षा है कि यहूदियोंने न तो महात्मा ईसाको मारा न फ़ांसी ही दी, किन्तु उन लोगोंको भ्रम होगया। इस भ्रमको भाष्यकारोंने यों सिद्ध किया है कि महात्मा ईसाको खुदाने आकाश पर बुला लिया, और उसके स्थानमें उसके एक शत्रु का आकार जो ईसाके मारने पर उतारू था, ईसाके सदृश बना दिया। लोगोंने उसे मार डाला। और महात्मा ईसा साहब आकाश पर भाग गये। न जाने आकाश पर किस प्रकार उड़ गये! और चालीस पचास मील ऊपर जाकर वह स्वांस कैसे लेते रहे! यह बाइबिलकी नक़ल की गयी है। और इसीके अनुकरणमें उन्होंने पैग़म्बरको भी बुराक़ पर चढ़ा कर सातों आकाशोंकी सैर करादी है, और आदम ईसा मूसा इबराहोमकी खुदासे बातें करादी हैं।

सी. ६ सू० निसाम आ० १५—५८

(७०) कुरानकी शिक्षा है कि खुदाने एक मनुष्यको प्रलय का विश्वास दिलानेके लिये मार दिया। और सौ वर्ष पश्चात् जीवित करके पूछा बता तू कितने वर्ष मृतक रहा। कहा एक दिनसे भी न्यून। खुदाने कहा कि नहीं तू सौ वर्ष तक मृतक रहा देख तेरे गधेकी हड्डियां अत्यन्त सड़ गई हैं। हम उसको तेरे सम्मुख ही मांस और खाल लगाकर जीवित करते हैं। गधा भी सौ वर्षका मृतक जीवित हो गया। उत्तमता यह है कि उसका खाना भी सौ वर्षमें कुछ भी न सड़ा और वैसाका वैसा ही तर व ताजा रहा। क्या यह छोटीसी गप्प है ? विदित होता

है कि उस मनुष्यने स्वप्न देखा होगा! पर उड़ाने वालोंने अच्छी बेपरकी उड़ाई! इलहामी पुस्तक गप्पोंका घर है इस कारण मानने योग्य नहीं।

सी. ३ स. बकर आ० २०६

(७१) कुरानकी शिक्षा है कि इबराहीमने खुदासे पूछा ए खुदा! तू कैसे प्रलयके दिन मृतक जीवित करेगा। खुदाने कहा तुझे इसमें कुछ सन्देह है? इबराहीमने उत्तर दिया कि सन्देह तो नहीं पर मेरे मनको विश्वास नहीं है। खुदाने कहा अच्छा चार पक्षी लेकर उनके टुकड़े करके चार पहाड़ों पर रख दे और फिर उनको बुला। वह तेरी ओर भागते आयेंगे। तीव्र बुद्धि भाष्यकारोंने उस पर टिप्पणी चढ़ा कर भला भांति प्रकाशित किया है। लिखते हैं कि महात्मा इबराहीमने एक कव्वा एक कबूतर एक फाखता (पिण्डख) और एक मैना चार पक्षी लिये चारोंके शिर काट कर तो अपने पास रख लिये और धड़ोंको ओखलीमें मिलाकर कूट चूर२ कर दिये और उस चूरेका थोड़ा२ सा भाग पर्वतों पर रख दिया, फिर बोलने लगा "ए कव्वे आ, ए कबूतर चला आ, ए फाखता (पण्डख) उड़ कर आजा, ए मैना चल और तुम अपने २ शिरोंके साथ आ लगो"। निदान ऐसा ही हुआ। महात्मा इबराहीमको तो इस विचित्र लीलासे विश्वास आगया। पर मेरा कुरान परसे ईमान टूट गया। शोक! मैं ऐसी निरर्थक बातोंको स्वीकार नहीं कर सकता।

सी. ३ सू० बकर आ० २६०

(७२) कुरानकी शिक्षा है कि सप्ताह वाले दिन मछली पकड़ने वालोंको खुदाने सुअर और बन्दर बना दिया। पूछना

चाहिये कि मनुष्योंके सुअर और बन्दर कैसे बन गये ? क्या उनके पूंछ भी निकल आई थी ? अथवा बिना पूंछके बन्दर और सुअर बने थे। ये सब व्यर्थ गप्पें हैं जिनको बुद्धिमान् कदापि मान नहीं सकते। ईश्वर करे कि मुसलमानोंको इन बातोंकी यथार्थता पता लगे ! परन्तु मुझे डर है कि जब उनको ये बातें मिथ्या जान पड़ेंगी तो इन पर नया जामा चढ़ानेको चेष्टा करेंगे। कुछ लोगों ने ऐसी चेष्टा की भी है, और कुछ कर रहे हैं। जब उन्होंने देखा कि महात्मा कुरान बह चले तो व्यर्थ टिप्पणी और रङ्ग चढ़ाना आरम्भ किया कि किसी प्रकार यह कठपुतलीका दृश्य (तमाशा) बना रहे। मैं इनसे पूछता हूं कि यदि एक बात प्रत्यक्ष झूंठ और बुद्धि विरुद्ध है तो उसको क्यों न मरी हुई मक्खीको भांति निकालकर फेंक दिया जावे। क्यों झूठमूठ उलटे पुलटे प्रमाण देकर ईश्वर की शक्तिको बदनाम किया जावे और गधे और ऊंट बनानेके लिये मस्तक (तर्क) छांटी जावे।

सो. ९ सू. एराफ आ. १६६

(७३) कुरानकी शिक्षा है कि कुछ फीट लम्बी चौड़ी नौका में नूहने पृथिवी भरके सब पशु पक्षी इत्यादिका एक २ जोड़ा उनके खाद्य द्रव्य सहित रख लिया और शेष सब प्राणी नष्ट हो गये ! यह कितनी बड़ी गप्प, वरन् गप्पका भाई गपोड़ा है। हाथी गेंड़ा, सिंह, भेड़िये, सुअर, बन्दर, गाय, भैंस, ऊंट, आदि लाखों बड़े २ जन्तुओंको एक छोटी सी नौका में रख लेना कौन मान ले ? भला क्या महात्मा नूह पृथिवी भरके सब पशु पक्षी कीड़े मकोड़े सर्पादि रेंगने वाले जीवोंके नाम और जाति जानते थे, जो क्रमानुसार नौकामें बिठाने गये ? यदि नूहकी कोई ऐसी पुस्तक

जिसमें वह यह नाम छोड़ गये हों मिल जावे तो नेचरलिस्टको एक बहु मूल्य उत्तम पदार्थ हाथ लग जावे। पर शोक है इन बातोंका कहीं शिर पैर नहीं है। विचारका स्थान है कि कुरान और पुराण एक समान होनेके अतिरिक्त मिथ्या कहानियोंसे कैसे भरे हुए हैं! सच पूछो तो ये दोनों सगे भाई हैं। दोनों ही मूर्खताके राज्यमें उत्पन्न हुये! मूर्ख लोग कहानियोंमें उलझ रहे हैं और बहुधा मिथ्या विचारमें फंसे हैं। ईश्वर इन सब पर अपनी दया करे।

सी. १८ सू. मोमिनून आ. २७

(७४) कुरानकी शिक्षा है कि यदि एक स्त्री किसी पुरुष का मुख तक भी न देखे तो भी उसके पुत्र उत्पन्न हो सकता है, इस बातका प्रमाण हजरत ईसा और मरियमके वृत्तान्तसे मिलता है जो कुरानमें कई स्थानों में आया है। कुरान वाले हजरत ईसा को युसुफ़बढ़ईका बेटा नहीं मानते, जैसा कि वह है। उलटा उसे बिना पिताके उत्पन्न हुआ मानते हैं। इस बातसे सृष्टि-नियम पर धब्बा और मरियम पर दोष लगता है। और यह बात मोजज़ेके स्थानमें एक अश्लील बात हो जाती है। मेरी बुद्धि और सभ्यता आज्ञा नहीं देती कि मैं हजरत ईसाको उन बच्चोंके साथ मिलाऊं जो आज कल अज्ञात पितासे उत्पन्न हुये समझे जाते हैं। कुरानकी ऐसी शिक्षासे ही मेरा मन खट्टा हुआ। ईश्वर करे मेरे भाइयोंको उपदेश प्राप्त हो और इन मिथ्या बातोंसे छुटकारा पा सकें।

सी. १६ सू. मरयम आ. १६—३५

(७५) कुरानकी शिक्षा है कि जब लूत के अनुगमियों ने हजरत लूत का उपदेश न माना तो खुदा को बड़ा क्रोध आया

और इसी क्रोध में आकर उन सब नगरों को उठाकर उल्टा करके फेंक दिया और फिर ऊपर से पत्थरों का मेह वर्षा दिया। तीक्ष्ण बुद्धि भाष्यकार इस बातको और भी बढ़ाकर कहते हैं और लिखते हैं कि खुदा ने आप तो नगरों को नहीं उल्टा था, किन्तु उसने जबराईल को आज्ञा दी कि वह अपने पंख नगरों के नीचे रख कर गृह आदि को पंखों पर उठाले, निदान जबराईल अनेक नगरों को पंखों पर उठा कर आकाश की ओर उड़गया और इतना ऊंचा चला गया कि आकाश वालों ने भी उन नगरों के गधों और कुत्तों और मुरगों का शब्द सुन लिया फिर जबराईल ने ऊपर से उल्टा करके नीचे फेंक दिया और वह सब नष्ट होगये। शोक है! मूर्खता पर।

सो० १२ सू० हूद आ. ८२

(७६) कुरानकी शिक्षा है कि खुदा ने शैब पैगम्बर के अनुयायियों को घोर शब्द करके ही नष्ट कर दिया। और इसी प्रकार सोलह पैगम्बर के अनुयायियों को नष्ट कर दिया। क्या ये घोर शब्द अब बन्द होगये हैं? ये सब बच्चों को बहलाने की कहानियां हैं कि जिनको यदि पढ़े लिखे मनुष्य सत्य मानलें तो वे भी बच्चे ही समझे जायंगे।

सी ६२ सू० हूद आ० ६४

(७७) कुरानकी शिक्षा है कि खुदा ने मुट्ठी भरकर कंकरियां मार कर मुसलमानों की विपक्षी सेना को भगा दिया। महाशयगण! भला क्या ईश्वर भी कंकरियाँ और रोड़े मारा करता है? रोडे मारना अज्ञान बालकों का कर्म होता है न कि बुद्धिमानों का और फिर खुदा का! मैं इन बातों को मान नहीं सकता॥

सो० ६ सू० अनफाल आ० १७

(७८) कुरानकी शिक्षा है कि खुदा ने सहस्रों फरिश्ते मुसलमानों की ओरसे लड़ने के लिये भेजने की प्रतिज्ञा की। शोक है कि वह आकाशी सहायता अब तक न मिलने के कारण द्रीन मुसलमान स्पेन व आस्ट्रीया से निकाले गये, यूरोप में उनकी हार हुई, अफरीका में पराजित हुये, भारतवर्ष में राज्य खो बैठे पर स्वर्गीय फरिश्तों ने उनकी सहायता न की। सम्भव है कि फरिश्ते फरंगियों की तोपोंके शब्द से डर कर आकाश में ही छिप रहे हों, अथवा मार्ग भूल गये हों! भला ऐसी मिथ्या बातें क्या मानने योग्य हैं!

सी० ६ सू० अनफाल आ० १७

(७६) कुरानकी शिक्षा है कि जुलकरनैन ने पश्चिम में जाकर देखा कि सूर्य एक दलदल अर्थात् कीचड़ में अस्त होता है। क्या खूब! पर जुलकरनैनी दलदल का जहाज चलाने वालों को अब तक पता नहीं मिला। अमरीका मिल गया, आस्ट्रेलिया मिलगया, अनेक अन्य टापू भी मिल गये पर जुलकरनैनी दलदल न मिला, क्या वह शुष्क होगई है या आकाश पर चढ़ गई है! महाशयो! एक साधारण भूगोलवित् भी इस बातको नहीं मान सकता तो मैं कैसे मान सकता हूं।

सी० १६ सू० कहफ आ० ८६

(८०) कुरानकी शिक्षा है कि जुलकरनैनने याजूज माजूजको लोहे की भीत और समुद्रके बीचमें बन्दी कर दिया और ये अद्भुत मनुष्य प्रलयके दिन वहांसे निकलेंगे। शोककी बात है कि यूरोप वालोंने चप्पा २ पृथिवी खोज डालो और पृथिवी भर की जन संख्या जानली पर याजूज माजूज उनको कहीं न मिले।

अब लोगोंने यह कह देना आरम्भ किया कि दीवार चीन सद सिकन्दरी (अर्थात् सिकन्दर बादशाह की बनाई भीत शत्रुओंके रोकनेके लिये) है और मङ्गोलिया वाले याजूज हैं। भाष्यकारों ने तीक्ष्ण बुद्धिसे भला काम लिया! लिखते हैं कि याजूज माजूज का परिमाण एक बालिश्तसे लेकर एक सौ बीस गज तक लम्बा है। उनके कान इतने बड़े हैं कि रातको सोते समय एक कान को तो नीचे बिछा लेते हैं और दूसरे कानको चादरकी भांति ओढ़ लेते हैं। शोक है ऐसी तीक्ष्ण बुद्धि पर और शोक है ऐसी इलहामी गप्पों पर! न जाने मुसलमान महाशय कब कुरानी कहानियोंको छोड़ेंगे! पुराणकी बखिया को स्वामी दयानन्दजीने उधेड़ा और लोगोंको प्रकाश दिखाया परन्तु कुरानकी बखिया न जाने कौन उधेड़ेगा और मुसलमान कब प्रकाश देखनेके योग्य होंगे? ईश्वर करे यह शीघ्र हो।

सी० १६ सू० कहफ आ० ९४

(८१) कुरानकी शिक्षा है कि खुदा ने आकाश को बिन खम्भों के चौकी पहरों सहित उत्पन्न किया और जब कोई शैतान चुप चाप ऊपर जाकर फरिस्तों की बात चीत सुनने लगता है तो उसके नक्षत्र तोड़ कर मारे जाते हैं और शैतान इस अग्निवर्षा से डर कर भाग जाता है। निस्संदेह यदि शैतान अपनी शैतानी से न फिरै तो एक दिन आकाश नक्षत्रों से रहित हो जायगा और फिर चन्द्रमा और सूर्य तोड़ कर मारने पड़ेंगे। फिर किसी दिन सातों के सातों आकाश ही शैतान के शिर पर मारने पड़ेंगे। एक तीव्र बुद्धि भाष्यकार ने गप्पों की गप्प हांकते ये लिखा है कि प्रथम आकाश दृढ़ लहर का और द्वितीय संगमरमर का तृतीय

लोहे का चतुर्थ शीशे का पञ्चम चांदी का षष्ठ सुवर्ण का सप्तम लालमणि का है। अत्यन्त शोक है इन पूर्ण मूर्खों पर! भला यदि कोई मुसलमान विद्यार्थी भूगोल और एस्ट्रनोमी (ज्योतिष) पढ़ कर कुरान से विमुख न होजाय तो वह और किस कूप में गिरे?

सो. २३ सूं० साफात आ० ७-१०

(८२) कुरानका शिक्षा है कि रोजे के दिनों में उस समय तक खाना उचित है जब तक प्रातःकाल की सफेदी इतनी न हो जाय कि श्वेत धागेको काले धागेसे भेद कर सकें। उसके पश्चात् दिन भर मुंह बन्द रखना उचित है। आधी रात को उठकर खाना कितना सृष्टि नियम विरुद्ध है। पशु पक्षी, कीट पतङ्गादि भी बहुधा रात्रि को विश्राम करते हैं। परन्तु रोजेदार को पेट की पड़ी हुई होती है। अरब में तो यह कानून चल गया। परन्तु खुदा को यह न सूझा कि पृथिवी के उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव के रहनेवाले कैसे रोजा रक्खा करेंगे? क्या ६ मास पर्यन्त दिनको भूखा मरना पड़ेगा! कितनी अधूरी शिक्षा है। महाशयगण! उपरोक्त आक्षेप योग्य बातों को रद्दीके टोकरे में डालकर तनिक एक पग और आगे चलिये।

सी० २ सू० बकर आ० १८७

(८३) कुरानकी शिक्षा है कि खुदा ने आकाश को हाथों के बल से बनाया और खुदा को तनिक भी थकावट न हुई। मैं पूंछता हूं कि हाथों से आकाश बनाने की क्या आवश्यकता थी? "कुन्" का शब्द कह देना ही काफी था, आकाश बन गया होता! यह माना जा सकता है कि रब्बउल कुरान बड़ा शक्तिमान और बली है, इस लिये हाथके साथ काम करके साधारण मजदूरों की भाँति उसको कुछ थकावट न हुई किन्तु वह कुन् का शब्द क्यों

भूल गया ? कदाचित् हाथ का बल दिखानेके लिये ! शोक है ! इस शिक्षा पर।

सी० २७ सू जारयात आ० ४७

(८४) कुरानकी शिक्षा है कि खुदा ने पृथिवी पर पहाड़ इस कारण रक्खे हैं कि वह मनुष्यों के भार से हिल न जावे। शोक है ! कि फिर भी पृथ्वी को सरदर्दी दूर न हुई और बराबर घूम रही है और बहुधा मारे कष्ट के कांप उठती है। कहां आज कल का प्रकाश और कहां कुरानकी शिक्षा, भला दोनों का क्या मेल हो सकता है ?

सी० १७ सू० अम्बिया आ० ३-१२

(८५) कुरानकी शिक्षा है कि खुदा आकाश और पृथिवीको थाम रहा है कि ऐसा न हो कि अपने स्थानसे इधर उधर हट जायं। शोक ! कुरानी खुदाकी शक्ति कितनी अल्प है कि पृथ्वीको बना कर उसको थामना पड़ा। कदाचित् इसी लिये कुरानमें कहा है कि "लाताखुजहोसन्तिबला नौम्" अर्थात् खुदाको न तो कभी नींद आती है और न ऊंघ ही। भला बखेड़े डाल कर खुदाको नींद कहां नसीब हो ! तनिक ऊंघ पड़े तो पृथिवी हाथसे गिर पड़े अथवा आकाश छूट जाय और सब कुछ किया कराया मट्टीमें मिल जावे। कुछ भाष्यकारोंने यों लिखा है जब यहूदी आदि लोगोंने कहा कि ईसा खुदाका बेटा है तो पृथिवी और आकाश इस कुफ्रके शब्दका समझ सुन कर फटने को हो थे कि खुदाने उनको पकड़ लिया और फटनेसे रोका। शोक है ! ऐसे प्रकाश पर ! हे ईश्वर ! तू मेरे भाइयोंको वह प्रकाश प्रदान कर जो मुझको प्राप्त हुआ है।

सी० २ सू० फातिर आ० ४१

(८६) कुरानकी शिक्षा है कि खुदाने नाना प्रकारके कार्य पूरा करनेके लिये फरिश्ते नियत किये हैं। इन फरिश्तोंके पंख होते हैं। कुछ के दो २ और कुछके तीन २ और किसी २ के चार चार और किसी २ के इनसे भी अधिक। भाष्यकारोंने तो जबराईलके छः सौ पंख वर्णन किये हैं, अज्ञानी लोग तो यहां तक वर्णन करते हैं, जबराईल का एक पंख पूर्वमें और दूसरा पश्चिममें पहुंचता और फरिश्तोंके विषयमें अद्भुत गढन्त बनाये हुए हैं जैसे हारूत मारूत दो फरिश्ते बाबलके कूपमें अब तक बन्दी हैं। कदाचित बाबलनगरके खण्डेर खोदते २ ये फरिश्ते भी मिल जावें। मैं ऐसे विचित्र पंखवाले जीवोंका होना नहीं मान सकता।

सी० २२ स० फातिर आ० १।

(८७) कुरान की शिक्षा है कि खुदा दोजखसे प्रलयके दिन प्रश्न करेगा क्या तू इतने मनुष्य और पत्थर खाकर तृप्त होगई वा नहीं? पेटू जहन्नम बोलेगी क्या कुछ और भी शेष है? अर्थात् यदि कुछ और शेष है तो दीजिये। खुदा उसके इस पेटूपनको देख कर चुप हो जायगा। और कुछ उत्तर न देगा। निःसन्देह खुदाका उत्तर न देना सभ्यताके सर्वथा विरुद्ध है। भाष्यकारोंने इसका यह उत्तर दिया है कि खुदा अपने दोनों पांव दोजखमें डाल देगा और जहन्नम् को तृप्त करेगा। शोक! महाशोक! ऐसी असभ्यताकी शिक्षा पर!

सी० १६ सू. काफ दाल आ. ३०

(८८) कुरानकी शिक्षा है कि खुदा दोजखको मनुष्यों, जिन्नों और पत्थरोंसे भरेगा। न जाने जिन्न कौन हैं। भूतों और

चुड़ैलोंकी कथा तो सुना करते थे। पर जिन्नोंका वृत्तान्त कुरान, सूरत जिन्न और अन्य आयतोंमें ही पढ़नेमें आया है। भला पत्थरोंने क्या पाप किया है, जो उनको दोजखमें डाला जावेगा। सम्भव है यह कारण हो कि मूर्त्ति पूजकोंको वहां मूर्ति बनानेके लिये पत्थरोंकी खोजमें इधर उधर न जाना पड़े, किन्तु दोजखमेंसे ही पत्थर लेकर मूर्त्ति बनाकर पूजने लग जावें और यह तो कुरानका निश्चित सिद्धान्त है कि सब मूर्त्ति पूजक दोजखमें डाले जावेंगे। किसीने सत्य कहा है कि खुदा प्रत्येक पदार्थके साथ उसके आवश्यक द्रव्य रखता है। क्या ही अच्छा होता यदि वर्त्तमान समयके प्रकाशके साथ खुदा कुरानको न रखता।

सो० १ सू० बकर आ. २४

(८६) कुरानकी यह शिक्षा है कि खुदा को खूब कर्ज (ऋण) दो, वह दो गुना फेर देगा। शोक है! कि खुदा सूदको कुरानमें हराम ठहरावे, और स्वयं दो गुने सूद पर कर्ज ले। भला खुदा को कर्जकी क्या आवश्यकता? क्या उसे किसी बेटे बेटी का विवाह करना था या घर बनवाना था कि लोगोंसे कर्ज लेने की आवश्यकता पड़ी। अच्छा होता यदि कहने वाला कहता "खुदा के नाम पर मुझे कर्ज दो' जैसे कि आजकल अनेक भिखमंगे बाजारोंमें कहा करते हैं—"बाबा! खुदाके नामका टुकड़ा दिला।" पर कोई ऐसा अपमान नहीं करता कि "बाबा! खुदाको टुकड़ा दिला।" शोक है! ऐसी अपमान जनक और व्यर्थ शिक्षा पर। शोक है! मनुष्य पर कि उसने खुदा को क्या २ बना दिया कि दूकानदारों और साहूकारोंको भी मात कर दिया।

सो० २७ सू. हदिया आ० १८-११।

(६०) कुरानकी शिक्षा है कि यदि खुदा चाहता तो सबको एक धर्ममें कर देता। परन्तु पूछिये कि उसने ऐसा क्यों नहीं किया। और ऐसा क्यों नहीं कर देता। क्या धर्म के लिये लोगोंका रुधिर बहता हुआ देखना उसको अधिक प्रसन्न करता है। क्या वह रूम देश वासियोंकी नाईं है, जो उस स्थान पर बैठ कर सिंह और भेड़ियोंको मनुष्योंके साथ लड़ते हुए और लोहू लुहान होते हुये देखकर अपनी हिंसकताकी तृप्ति करते थे? अथवा क्या वह चाहता है कि धार्मिक युद्धमें भी एलीमेंक्स आकर अपना रुधिर बहावें तो उसकी हिंसकताकी तृप्ति हो। आश्चर्य है ऐसी शिक्षा पर!

सी० ६ सू० मायदा आ० ५३

(६१) कुरानकी शिक्षा है कि खुदा जिसको चाहता है गुमराह (कुमार्गगामी) करता है और जिसको चाहता है राह पर लाता है। भला फिर मनुष्योंको क्यों दोजखमें डाला जावे। जब कि उन्होंने जो कुछ किया वह खुदाकी इच्छानुसार ही किया? खुदा स्वयं ही दोजखमें जावे। अज्ञानी लोग इस मिथ्या बात पर तदवीर भाग्य और चेष्टाकी लंगड़ी शिक्षाका खोल चढ़ाते हैं किन्तु व्यर्थ?

सी० ६ सू० मायदा आयत आ० ४५

(६२) कुरानकी शिक्षा है कि खुदा मुशरिकके सिवाय अन्यके पाप क्षमा कर देता है। आश्चर्यकी बात है कि एक मूर्ति पूजक कि जिसने कभी मदिरा पान, व्यभिचार, चोरी, ठगी नहीं की और सर्वदा अपने देवताके क्रोधसे डरता रहा, दोजखमें डाला जावे। और दूसरी ओर एक मदिरा पान करने हारा

कबाबी व्यभिचोरी, चोर और दुष्ट मनुष्य अपने सब पापोंको क्षमा करवाकर स्वर्गका आनन्द भोगे। शोक है! कि कम 'श्यौरी' को छोड़ कर पश्चात्ताप क्षमा सहायता और मध्यस्थके निर्मूल और मिथ्या सिद्धान्तोंने बहुधा मनुष्योंको इतना कुमार्गगामी और पापों पर साहसी कर दिया है।

सी० ५ सू० निसाम आ० ११६

(६३) कुरानकी शिक्षा है कि जब कुरान पढ़ा जाता है तो मुसलमानों और काफिरोंके मध्यमें खुदा एक परदा डाल देता है जिससे कि काफिर कुरानको न सुन सकें और न समझ सकें। यह इस हेतु कि खुदाने उनके दिलों पर मुहर लगा दी है और उनकी आंखों पर पर्दे डाल दिये हैं। भला यदि यही बात थी तो काफिरोंको धर्म शिक्षा करनेके लिये नबी क्यों भेजे और यदि काफिर लोग सत्य-मार्ग पर न आवें तो उनका दोष हो क्या? महाशयगण! काफिर उसको कहते हैं कि जो निरर्थक बातोंको ईश्वरकी ओरसे न माने और बुद्धि विरुद्ध और सृष्टि नियम विरुद्ध सिद्धान्तों और मौजिजों पर हंसी उड़ावे। मैं हंसी तो नहीं उड़ाता हूं परन्तु अपने मुसलमान भाइयोंके लिये बुद्धि और ज्ञानके लिये प्रार्थना करता हूं। आप मेरी प्रार्थनाका साथ देकर तनिक आगे चलिये मैं आपको बताऊंगा कि कुरान उपरोक्त बातोंके सिवाय 'सोशलिजम'के लिये कैसा पीछे पड़ा है। मुस्ते नमूना अज खरवारह (गोनभरमेंसे एक मुट्ठी बानगी लेकर देखनेसे अच्छा बुरा विदित हो जाया करता है) देखिये॥

सी० १५ सू० इसमाइल आ० ४५-४६

(६४) कुरानकी शिक्षा है कि मुशरिक और काफिर अपवित्र

हैं उनसे मित्रता मत करो। यदि कोई उनसे मित्रता करेगा तो वह भी काफिर हो जायेगा और इस कारण खुदाकी अप्रसन्नताका भागी होगा। काफिरके अर्थ ऊपर बता चुका हूं। शोक है कि ऐसे बुद्धिमान् और ज्ञानवान् पुरुषोंको अशुद्ध समझा जावे और खानेबदोश असभ्य और कुशील मनुष्य जो बुद्धि और ज्ञानसे उल्लूकी भांति रहित होकर प्रत्येक गप्पको ईश्वरकी ओरसे कही हुई अङ्गीकार कर लें उनको अत्यन्त शुद्ध माना जावे। कुरानकी इस शिक्षाके अनुसार सब ईसाई, बौद्ध, आर्य, सिक्ख आदि जिनमेंसे प्रथम तसलीस (पिता, पुत्र और पवित्रात्मा) को मानते हैं और सारेके सारे ही कुरानको न माननेवाले हैं अशुद्ध ठहरते हैं और दोज़खी बनते हैं। केवल थोड़े करोड़ कुरानी ही बहिस्त के ठेकेदार हुये। यद्यपि ईसाई और आर्य आदि ऐसे बहिश्तके भूखे नहीं हैं। परन्तु कुरानको यह शिक्षा क्या कभी प्राणिमात्रमें भ्रातृभावका प्रचार कर सकती है? कदापि नहीं। किसीने सच कहा है कि मुसलमानका हाथ प्रत्येक मनुष्यके विरुद्ध और प्रत्येक मनुष्यका हाथ मुसलमानके विरुद्ध रहेगा। मैं इस भ्रातृभाव फैलानेकी शिक्षाकी जड़ काटनेवाले सिद्धान्तको किसी प्रकार ईश्वरकी ओरसे नहीं मान सकता।

सी० १० सू० तोबा. आ० ६१

(६५) कुरानकी शिक्षा है कि काफिरोंको जहां पाओ मार डालो क्योंकि क़तलसे कुफ्र बड़ा है। शोक है! इस प्रकारकी शिक्षा, शान्ति और चैनको कितनी हानिकारक है। इसी शिक्षाने तो महमूद ग़ज़नवीको अमीनुल मिल्लत बनाया।

सी० २२ सू० अखराब आ० ६१

(६६) कुरानकी शिक्षा है कि लूटका धन खुदा और उसके रसूलका भाग है और खुदाको लूटके धनका पञ्चम भाग मिलना उचित है। भला जब खुदा ही लूट मार करनेके लिये आज्ञा भेजे तो फिर महमूदका क्या दोष? पर हे भाइयो! मैं इस शिक्षाको बड़ी भयानक और नष्ट करनेहारी समझता हूं। ईश्वर प्रत्येक मनुष्यको इससे बचावे।

सो. ६ सू. अनफाल आ. १—२

(९७) कुरानकी शिक्षा है कि मुसलमानो मत खुदाकी ओर से है। मैं इस प्रकार तो इसलाम और कुरानको ईश्वरकी ओरसे अङ्गीकार करता हूं कि जिस प्रकार सब बुराइयां कुरानी खुदाकी ओरसे हैं वही उनका कर्त्तव्य है। सब कुमार्गमें चलाना कुरानी खुदाकीओरसे है वह ही कुमार्गमें चलनेवाला है। सब पदार्थोंका यहां तक कि शैतान का भी वही रचयिता है अर्थात् शैतान भी ईश्वरकी ओरसे है। इस प्रकार मुसलमानी मत भी निःसन्देह खुदाकी ओरसे है परन्तु उपरोक्त शिक्षाको देखकर मैं इसलामको सच्चा धर्म नहीं कह सकता। यदि मैं ऐसा कहूं तो सत्य न्याय यथार्थ के गले पर छुरी फेरूंगा, और उपरोक्त बातों के अतिरिक्त मैं निम्नलिखित बातों को जो स्त्रियोंके साथ अन्याय के बर्त्ताव के विषय में हैं, छिपाऊंगा, जो मैं कदापि नहीं कर सकता। महाशय गण! इस अन्याय को भी प्रकट करें और देखिये।

सो० ३ सू० उमरान् आ० १६

(९८) कुरानकी शिक्षा है कि स्त्रियां तुम्हारी खेती हैं जाओ उनके समीप जिस समय और जिस प्रकार चाहो। खेती किसानों और जिमीदारों का धन होती है, स्त्रियों को धन कहा गया

है, और केवल विशेष भोगकी तृप्तिका पदार्थ समझा गया है। पुरुषों के तुल्य इनको कोई अधिकार प्राप्त नहीं है। आगे देखिये।

सी० २ सू० बकर आ० २१६

(९९) कुरानकी शिक्षा है कि यदि कोई स्त्री दुष्ट कर्म करे तो उसको अत्यन्त पीटो और घर में कैद रक्खो यहां तक कि वह मर जावे। शोक ! स्त्री दुष्ट कर्म करे तो उसको पति मारे, यदि पति दुष्ट कर्म करे तो उसको स्त्री क्यों न जूती लगाये और घर में यावज्जीवन बन्द रक्खे। यह केवल इस कारण कि स्त्री दासी की भांति धन मानी गई है।

सी. ४ सू. निसाय आ. १३

(१००) कुरानकी शिक्षा है कि मुसलमान लोग स्त्री को तलाक दे सकते हैं। शोक है ! स्त्री कुरूपा हो, कन्या जने वा बुरी हो तो उस को तलाक दे दिया जावे किन्तु यदि पुरुष कुरूप हो, कन्यो उत्पन्न करे और बुरा हो तो उसको तलाक न दिया जावे। तलाक का सिद्धान्त जहां स्वयं भ्रष्ट है वहां अपने फल के अनुसार भी बुरा है। तलाक का सिद्धान्त पति व पत्नी में सच्चे प्रेम को उत्पन्न नहीं होने देता। किस लिये कि स्त्री सर्वदा डरती रहती है न जाने उस को किस दोष पर तलाक दे दिया जावे। तलाक का सिद्धान्त बाजारी स्त्रियों की संख्या को बढ़ाने वाला है। तलाक का सिद्धान्त स्त्रियों को निर्मोह बनाने वाला है।

सी. २८ स. तलाक आयत १-६

(१०१) कुरानकी शिक्षा है कि मुसलमान लोग एकही समय में दो दो, तीन तीन, चार चार, स्त्रियां विवाह सकते हैं। भला फिर स्त्रियां एकही समय में दो २ तीन तीन चार चार पति

क्यों न करें? ऐसा होता कि कुरानको बनाने वाली कोई स्त्री होती तो हम देखते कि स्त्रियां पुरुषोंको तलाक देतीं, घर कैद रखतीं, एक साथ चार पति करतीं। वह समय धन्य होगा, जब मुसलमानों की स्त्रियां शिक्षिता होकर दासत्व से मुक्त हो जावेंगी और पुरुषों की भांति सब अधिकार चाहेंगी उस समय उन को कुरान को बन्द करके रखना पड़ेगा वा चार २ पति करने का समय आयेगा।

सी० ४ सू० नसाय आ० ३

[१०२] कुरानकी शिक्षा है कि मुसलमान स्त्रियां परदा करें और चादर से अपने मुख को ढक कर बाहर जावें कि परपुरुष उन को न देख सकें वा वे अन्य पुरुष को न देख सकें। कोई कारण नहीं ज्ञात होता कि मुसलमान पुरुष क्यों न चादरों से मुख छिपाकर बाहर निकला करें कि कोई पर स्त्री उन को न देख सके वा वह किसी परस्त्री को न देख सकें। क्या मुखके छिपाने से पवित्रता स्थिर रह सकती है जब मन का परदा उठ गया हो? इसके सिवाय मुंह को कपड़े से छिपाकर सोना, चलना, फिरना, स्वास्थ्य के लिये अत्यन्त हानिकारक है। शोक है कि पुरुष आप तो खुले मुख स्वच्छ वायु सेवन करें और स्त्रियां बैल की भाँति मुंह पर चादर और मुंहछींका डालनेके लिये विवश की जावें।

सी० २२ सू० अखराब आ० ५९

(१०३) कुरानकी शिक्षा है कि मुतबन्ना अर्थात् लेपालक पुत्र की स्त्री तुम्हारे लिये हलाल है। यह बात कितनी आक्षेपयोग्य है। माना कि मुतबन्ना स्वपुत्र नहीं है, पर फिर भी साधा-

रण सोशल मेल मिलाप के अनुसार माने हुवे बेटे की स्त्रीसे विवाह करना कैसा अश्लील है। इससे यह सिद्ध होता है कि यदि किसी का मन किसी की स्त्री पर मोहित होजावे और वह उस स्त्री को वशमें न कर सके तो उस के पतिको लोभ देकर कि हम तुम को अपनी सब सम्पत्ति का स्वामी बना देंगे, मुतबन्ना बना ले अर्थात् गोद लेले और फिर सहज जोड़ तोड़ करके स्त्री को उड़ा लिया जावे। यदि स्त्री सहमत न हो और कहै कि मैं तुम्हारी पुत्र वधू हूं तुम मुझे बिना निकाह और बिना साक्षी के क्यों अपने व्यवहार में लाते हो तो तत्क्षण कुरानी आयत दिखाई जावे, कि देखो तुम मेरे लिये हलाल हो। अर्थात तुम्हारे साथ विवाह करना दोष नहीं और काजीकी साक्षी की आवश्यक्ता नहीं खुदा ने स्वयं मेरा तुम्हारा निकाह कर दिया है। अत्यन्त शोक है! ऐसी शिक्षा पर।

सी० २२ सू० अ खराबआ० ३७

(१०४) कुरानकी शिक्षा है कि दरिद्रतासे मत. डरो निकाह अवश्य करलो। खुदा तुम्हें धनाढ्य कर देगा। संभव है कि एक मनुष्य एक विशेष धनवती स्त्रीके साथ विवाह करके धनाढ्य हो जावे। पर क्या ऐसा भाग्य प्रत्येक मनुष्यका होता है। नहीं, फिर खुदाका दरिद्रताकी दशामें निकाह की आज्ञा देनेका क्या आशय है? यदि धनाढ्य बननेको यह खुदाई विधि है, तब तो अच्छी सरल रीति है। पर मैं मुसलमानोंको उपदेश करता हूं कि वे ऐसा न करें जब कि वे स्वयं ही लङ्गड़े हों दूसरे लङ्गड़ेको शिर पर न उठावें।

सी पारा १८ सूरत नूर आयत ३२।

(१०५) कुरान की शिक्षा है कि चचा और मामा आदि समीपके कुटुम्बियोंकी कन्यायें तुम्हारे लिये हलाल हैं। अर्थात् उनसे विवाह करना दोष नहीं। इतने समीपके कुटुम्बोंमें विवाह करना मैं अश्लील समझता हूं। सहोदर भाई बहिनो की सन्तान एक दूसरेको भाई बहिन कहते फिरें और फिर एक निर्दिष्ट समय आजाने पर वे पति पत्नी बन जावें। अरब निवासी आपसमें एक दूसरे कबीलेके साथ विरोध रखनेके कारण कन्याओंको अपने ही कुटुम्बमें रखते थे और शत्रुके कुटुम्बमें कन्या देना अपमान जानते थे। पर भारतवर्षमें जहां अरबके असभ्य मनुष्योंकी भांति अल्प मनुष्य संख्याके झोपड़े पृथक् २ न थे परन्तु बड़े बड़े नगरोंमें जहां नाना कुटुम्ब जाति गोत्र के मनुष्य वास करते रहते हैं, इस नियमका चलाना उचित नहीं हैं। मै उसको अश्लील जानता हूं।

सी. २२ सू. अखराब आ. ५०।

(१०६) कुरान की शिक्षा है कि मुसलमान वा कुरानी चारसे अधिक विवाह एक साथ नहीं कर सकते पर कोई कारण नहीं जान पड़ता कि जो ऐसा नियम बनावे वह अपने आपको क्यों पृथक् जाने और नौ स्त्रियां करे। मैं इस बातको नहीं मान सकता कि नियम बनाने वाला ही नियमको तोड़े। यदि नियम खुदाकी ओरसे है तो क्या कारण कि एक मनुष्य पृथक् कर दिया जावे? इसलिये मैं इस बातको न्यायानुकूल नहीं समझता हूं। केवल इस बातको ही नहीं परन्तु उपरोक्त सब बातोंको मैं दोषयुक्त जानता हूं। ऐसी ऐसी बातोंसे ही तो विदित होता है कि कुरान कदापि ईश्वरीय नहीं हो सकता। केवल ईश्वरीय पुस्तक

नहीं परंतु वह एक न्यायशील बुद्धिमान मनुष्यकी बनाई भी नहीं समझी जा सकती। प्रथम तो उपरोक्त सब आक्षेप स्वयं इस बातको प्रतीत कर रहे हैं कि कुरान केवल यही नहीं कि ईश्वरीय ज्ञानसे पतित है परन्तु वह एक मनुष्य कृत पुस्तक कहलाये जाने के भी योग्य नहीं है। पर तौ भी मैं इस बातको और भी स्पष्ट रूपसे आप लोगोंसे निवेदन करना चाहता हूं। निष्पक्ष और शिक्षित महाशय जो सत्य भागी हों, वे इस पर विचार करें?

सो० ४ सू० नसाय आ० ३।

(१०७) कुरानकी शिक्षा है कि हे रसूल! (ईश्वर कहता है) हम तुमको यह गुप्त समाचार सुनाते हैं तू और तेरी जाति इससे अत्यन्त अज्ञात थे। महाशयगण! इस वही (ईश्वरकी ओरसे आज्ञा जो जबराईल द्वारा मुहम्मद साहबको आती थी) से पहले नूह इबराहीम आदि की कहानियोंको वर्णन किया गया है, और इनको ईश्वरीय गुप्त समाचार कहा गया है। क्या इनको अरब निवासी पहिले नहीं जानते थे? बाइबिलके पढ़ने वाले अन्य मनुष्य भी इनको न जानते थे? यह सत्य है, कि कुरानके उत्पन्न होने से पहले इबराहीम, नूह, मूसा आदि की सविस्तर कहानियां बाइबिलमें लिखित थीं। फिर उसको गुप्त समाचार कहना और और इलहामका दम भरना सर्वथा भूल है। न जाने ईश्वरको बाइबिलका संक्षेप बनानेके लिये क्यों जबराईलके भेजनेकी आवश्यकता पड़ी। मैं बाइबिलको कुरानसे अधिक प्रमाणित समझता हूं। परन्तु दोनों को ही ईश्वरीय ज्ञान पुस्तकके पदसे च्युत समझता हूं।

सी० १२ सू० हूद आ० ४६।

(१०८) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने उसको वहा द्वारा अपने बन्द पर उतारा है। पर क्या खुदा और उसका जबराईल केवल मूसा, ईसा, इबराहीम, नूह, लूत आदि बाइबिली नाम ही जानते थे। क्या उनको भारतवर्षके ऋषि मुनि, पाण्डव, कौरव, रामचन्द्र और सीता, विक्रमादित्य, गोतम, बुद्ध, कणाद, पतंजलि आदिके नाम नहीं आते थे? और क्या यह सबके सब ईसा मूसासे कम थे? फिर वही शरीफ और कुरान शरीफमें उनका नाम क्यों नहीं आया? सिकन्दरको तो जुलकरनैन (जिसका पूर्व से पश्चिम तक राज्य था और जिसने कुरान कोष और हदीस एकत्र किये) के नामसे स्मरण किया है। पर चन्द्रगुप्त का नाम कहीं न आया। रसूल खुदाने अपनी सौदागरी के दिनोंमें यात्रा करते हुए श्याम देश आदि के सूबोंमें जो नाना प्रकारकी कहानियां यहूदी लोगोंसे सुनीं सो उनको स्मरण रहीं और स्वप्नमें वे ही दृष्टिगत हुईं। यद्यपि इसमें भी अनेक भूल रह गई हैं, जो बाइबिलके देखने से साफ हो सकती थीं। इस कारण मैं इलहामी वा ईश्वरकृत पुस्तक नहीं मान सकता।

सी० १४ सू० नहल आ० १०१-१०३

(१०९) कुरानको यह शिक्षा है कि अहले किताब (ईश्वरकृत रसूल द्वारा आई हुई पुस्तकोंके अनुयायी) ने जो यहूदी और निसारा आदि लोग हैं, इंजील और तौरेतमें कुछ अदल बदल कर दिया है। इंजील और तौरेतके अतिरिक्त ज़बूर और अन्य पुस्तकोंमें नबियोंका भी संक्षेप वृत्तान्त कुरानमें आया है पर इस वेद शास्त्र जिन्दावस्था आदि पुस्तकोंका कहीं नाम नहीं आया। जिससे विदित होता है और सम्भव है कि यह पुस्तकें कुरानसे

पीछे बनी हों। यदि पहले होतीं तो इंजील और तौरेतकी भांति इनका भी कुरानमें वर्णन होता। परन्तु यह कहना ऐसा ही जैसा कि बाबर बादशाह औरङ्गजेबके पश्चात् उत्पन्न हुआ। नहीं, वेद शास्त्र और जिन्दावस्थाकी पुस्तकें सहस्रों वर्ष कुरानसे पहले थीं। शेष रही यह बात कि कुरानमें इनका कहीं वर्णन नहीं। इसका यह कारण है जिस बुद्धिसे कुरानकी उत्पत्ति हुई उस बुद्धिने कभी वेदका शब्द नहीं सुना था। इस कारण अशक्त है।

सी० २६ सू० फतह आ० ३९

(११०) कुरानकी यह शिक्षा है कि शपथ मत खाओ। परन्तु खुदाने वही द्वारा कोहतूर, मक्का, जैतून, घोड़ा, हवाओं आदिकी शपथ खाई थी। क्या कारण कि खुदाने हिमालय, एल्पस, विन्ध्याचल पर्वतों और भारतवर्षके आड़ू, आलूचों, सन्तरों और भैंस हाथी आदिकी कहीं शपथ नहीं खाई? जिन पदार्थोंको अरबी लोग प्रतिष्ठा करते थे और जिनकी वह शपथ खाते थे, उनकी तो शपथ खाई, परन्तु जो पदार्थ इनसे बढ़कर उत्तम थे, उनकी शपथ न खाई। क्या कारण कि खुदाने कुरानमें किसी विशेष नदीकी शपथ न खाई? यदि अरबमें नदी नहीं थी तो गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, बालगा, डेन्यूब, मसूरी, मिसीसिपी, एमेजन जैसी नदी उस समय खुदाको नहीं दीख पड़ती थीं? कहीं तो कुरानमें कहा होता। शपथ है मुझे गङ्गा की, वा शपथ है मुझे मसूरी मिसिसिपी की, वा शपथ है मुझे यमुना और बालगा की। पर ऐसी शपथ नहीं है! क्यों? इसका कारण कि जिस बुद्धिके भीतरसे कुरानी शपथ निकली उसने गंगा यमुना, बालगा, डेन्यूब काहेको देखे थे और काहेको मरुभूमिमें उसने

कोई नदी देखी थी। इस कारण मैं कुरानको केवल एक मनुष्य की बुद्धिकी गढ़न्त मानता हूं।

सी० २६ सू० मुरसिलात आ० १-५

(१११) कुरानकी यह शिक्षा है कि खुदाने अनपढ़ोंमें अनपढ़ रसूल भेजा। तो क्या पढ़े लिखे विद्वान लोगोंके लिये एक अनपढ़की बात माननीय हो सकती है और जिस पुस्तकमें यह वर्णन हो कि सूर्य एक दल दलमें अस्त होता है, ईसा बिना बाप के उत्पन्न हो गया, लाठीका सांप बन गया इत्यादि २ क्या हम उस पुस्तकको माननीय समझ सकते हैं? कमसे कम मैं तो एक यथार्थ मानी मनुष्य रचित पुस्तक भी नहीं कह सकता। जिस प्रकार इसको खुदाकी पुस्तक कहूं इस कारण मैं विवश हूं कि कुरानको ईश्वरीय पुस्तक मानूं।

सी० २८ सू० जुमआ आ० २

(११२) कुरानकी शिक्षा है कि खुदाने उसको अरबी भाषा में उतारी, यह इस कारण कि लोग उसको फ़ारसी भाषामें होने पर यह न कह दें कि हम इसको नहीं समझ सकते। भला क्या खुदाको ज्ञात न था कि अन्य मनुष्य जो अरबी नहीं जानते वह भी अरबों कीसी ही शङ्का करेंगे अन्यथा हमको मानना पड़ेगा कि जिस समय कुरान भेजा गया उस समय जितने मनुष्य संसारमें थे उन सबको अरबी भाषा थी, इस कारण उन सबको शिक्षाके लिये खुदाने आदिमें जब कि इस संसारमें एक भाषा प्रचलित थी, कुरान भेजा। परन्तु यह बात मान ली गयी है कि आजसे १३ या १४ सौ वर्ष पहिले अरबी भाषाके साथ २ ग्रीक लैटिन आदि भाषायें प्रचलित थीं, कि जिनका अरबीके साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। इसलिये मैं इस बातको नहीं मान सकता

कि ईश्वरीय पुस्तक जो साधारण मनुष्योंके उपदेशके लिये उतरे वह एक ऐसी भाषामें हो कि जिसको सिवाय कुछ जाति और जङ्गली भ्रमण कर्त्ताओंके कोई न समझ सकता हो। अतएव यह आवश्यक है कि खुदाके वाक्य आदि सृष्टिमें ऐसी भाषामें हों जो सब भाषाओंकी जड़ हो। कुरान इसमें नहीं है। इस कारण मैं उसको ईश्वर वाक्य नहीं मानता।

सी० २४ सू० हमसजिदा आ० ४४

(११३) कुरानका शिक्षा है कि खुदाके वाक्य नहीं बदल सकते। यदि वाक्योंके अथ हम सृष्टि नियमके लें तो हम देखते हैं कि कुरान कैसी सृष्टि नियम विरुद्ध बातों और कपोल कल्पनाओंसे भरा हुआ है। यदि वाक्योंके अर्थ केवल बातों या आयतोंके लें तो भी हम देखते हैं कि एक आयत को बदल कर दूसरी आयत उतारी गई है। जैसा कि कुरान में इस बातका वर्णन है कि 'हम नहीं मनसूख (अन्यथा) करते, किसी आयतको।' पर यह 'उतारें इससे और अच्छी आयत।' सत्यासत्यके निर्णय करने वाले मनुष्य कितनी ही कुरानी आज्ञायें ऐसी देख सकते हैं कि जो पहले उचित समझी गईं फिर निषेध की गयीं। मदिराका पहले निषेध नहीं किया किन्तु बहुत कालके पश्चात् निषेध किया। इसी प्रकार और कई बातें एक तरह पाई, पर फिर दूसरी भांति कर दी गईं। यथा पहले बैतुल मुक़द्दस फिर काबे की ओर मुंह करके नवाज़ पढ़ना, तो क्या खुदाकी आज्ञा कुरान में अटल हुई? कदापि नहीं। फिर मैं किस प्रकार मान लूं कि यह ईश्वर वाक्य है, जिसमें एक दिनके पश्चात् ही आज्ञा बदल दी जाती है।

सी० ७ सू० अनफाल आ० ११३

(११४) कुरानकी शिक्षा है कि मोहम्मद! लोगोंको, जो काफिर नहीं, कह दे कि वह और उनके पूज्य देव कुरान जैसी पुस्तक बना लायें। यदि वह सच्चे हैं और निश्चय वह नहीं बना सकेंगे। निदान वे दोजखमें डाले जायंगे। महाशय गण! क्या किसी पुस्तकके ईश्वरकी ओरसे होनेका यह कोई प्रमाण है कि उसके समान कोई नहीं बना सकता! कदापि नहीं। यदि यही बात हो तो सम्भव है कि शेक्सपियरके सब नाटक और मेकालेके लेख जो अपने ढङ्गमें सर्वथा निराले हैं, सब ईश्वरकी ओरसे हो समझने चाहियें। और इसी प्रकार एक दूध पीते बच्चेकी ऊट पटांग बात चीत भी जिसका अनुकरण कोई नहीं कर सकता, ईश्वर की ओरसे ही होनी चाहिये। क्या यदि कोइ मनुष्य चील और कौवोंकी भांति कांय २ वा बन्दरकी भांति चिड़ २ अथवा चिड़ियोंकी नांई चूं २ नहीं कर सकता तो उसके यह अर्थ होंगे कि बानर, कौव्वे और चिड़ियां सब खुदाकी बोलियाँ बोल रहे हैं! कदापि नहीं। इस बातको छोड़ कर यदि यह कहा जावे कि कुरानकी उत्तम भाषाको कोई समता नहीं कर सकता तो मैं पूछता हूं कि उत्तम भाषा किस को कहते हैं? क्या यह कि एक ही कहानीको सैकड़ों वार दोहराया जावे और एक ही विषयको बारम्बार लाया जावे और एक ही बातको दूसरी तीसरी वार लिया जावे और मकड़ीका शीर्षक देकर सिंह, भेड़िया इत्यादिका वृत्तान्त लिख दिया जावे। मधुमक्खीका विषय लिखते समय बाबा आदम आदिकी कहानियां सुना दी जावें। यदि वास्तवमें उत्तम भाषाके यही लक्षण हैं तो निःसन्देह कुरान अद्वितीय है और इस जैसी न आज तक कोई पुस्तक बनी

है और न कोई बुद्धिमान् बना सकेगा! और उत्तम भाषाके इस अर्थ के अनुसार मेकाले, ग्लेडस्टोन पिट जैसे योग्य वक्तृता करने वाले मनुष्य नितान्त मूर्ख और वक्तृतासे रहित समझे जा सकते हैं। यदि उत्तम भाषा और सद्वक्तृता कोई और पदार्थ हैं और वास्तवमें वह कुछ और पदार्थ हैं तो मेरी सम्मति अनुसार तो कुरानका पद सद्वक्तृताके सबसे नीचेके भाग में रखना चाहिये जिससे कोई मनुष्य उसको पढ़कर सद्वक्तृता करने वाला होनेकी चेष्टा न करे। मुझे जान नहीं पड़ता कि खुदाने क्यों एक ही बातको बारम्बार दोहरानेके लिये जबराईलको थकाया। केवल यह कह देना उचित था कि बाबा आदमकी कहानीको बीस बार, इबराहीमकी कहानीको पन्द्रह बार और बहिश्तके किस्सेको एक कम अस्सी बार लिख लो, चलो जी छुट्टी हुई। भाई! मेरी बुद्धि इस बातको कदापि अङ्गीकार नहीं कर सकती कि कुरान स्वयं रसूल खुदाका अद्वितीय मौजजा ईश्वरकृत पुस्तक है।

सी० १ सू० बकर आ० २३

(११५) कुरानकी शिक्षा है कि हे रसूल! तू लोगोंको सुना दे कि यदि कुरान खुदाकी ओरसे न होता तो उसकी बातोंमें भेद पाया जाता।

महाशयगण! विचारिये 'कुन्'का दम भरना परन्तु फिर भी छः दिनमें पृथवी और आकाशका बनाना, मां और बापके वीर्य से मनुष्यकी उत्पत्तिकी शिक्षा, पर आदम को बिना मा बापके और हजरत ईसाको बिना बापके उत्पन्न करना! ला तबदीला ले कलमतिल्लाः (खुदाके नियम बदल नहीं सकते) का दम भरना, किंतु फिर भी लाठियोंके सांप बनाना और पत्थरोंमें से ऊंटोंका

उत्पन्न करना, खुदाका पवित्र होना, किंतु फिर भी उसका मक्कार फरेबी लड़ाका कुमार्ग पर चलने वाला विघ्नकर्त्ता होना, आदि बातें कैसी एक दूसरेके विरुद्ध हैं। निदान कुरान एक मनुष्य रचित पुस्तक है। खुदा और बहोका नाम बदनाम है। शोक कुरानके भीतर तो वह बारूद भरी हुई है कि जिससे वह उड़ रहा है। सच है यह मिसरा "इस घरको आग लग गई घरके चिराग़से।"

सो० ५ स० नासाय आ० ८२

(११६) कुरानकी शिक्षा है कि वह लोगोंके लिये उपदेश है। मैं पूछता हूं कि खुदा के वाक्य और वह भी लोगोंके उपदेशके लिये, परन्तु उनमें मुअम्मों (रहस्यों) और पहेलियोंके का क्या तात्पर्य! अब तक बड़े २ भाष्यकार और वक्ता हो नहीं किन्तु रसूल खुदाके असहाब (बन्धु) भी प्रयत्न कर चुके हैं, पर कुरानके हरूफमुक्तअका आशय किसी की बुद्धि में नहीं आया। अन्तमें सबको कहना पड़ा कि यह एक भेद है जिसको खुदा ही जानता है! भला बताइये उपदेश तो लोगोंके लिये, पर भेद किस के लिये? लिखे मूसा, पढ़े खुदा! इसके अतिरिक्त कितनी ही आयतें ऐसी हैं कि जब तक आप तसरीफ (व्याख्या) और हदीस (मुहम्मद के वचन) को लेकर न बैठें टक्करें मारिये पर आशय समझमें नहीं आयेगा! डण्डेका एक सीत मात्र की नांई देखिये "अलम्ताः कैफ़ा फ़अला रब्बोका बअसहा बिलफ़ल" (सिपारः ३० सूरतुलफील) क्या तूने नहीं देखा कि तेरे खुदाने हाथी वालोंके साथ क्या किया! इन्नशाने अकहुमल अबतर (सिपारः ३०) तेरी बुजुर्गोंको कसम कि वह मनुष्य दुर्दशामें

है। आदि २ सहस्रों आयत हैं। हदीस को अलग रखिये। तफसीरको दूर रख दीजिये और फिर कोई मनुष्य बताइये कि 'असहाबफील और अब' क्या भेद है मेरी अनुमतिमें ऐसी पुस्तक कि जिसके विषयको जाननेके लिये मनुष्यकृत पुस्तकों की आवश्यकता पड़े, पूर्ण और ईश्वरकृत नहीं हो सकती।

सी० ११ सू. यूनुस आ. ५७।

बात बढ़ी जाती है इसलिये इसको छोड़कर मैंने उपरोक्त कुछ कारण मुसलमानी मत छोड़नेके विषयमें वर्णन कर दिये हैं। शेष यह बात कि वेदोक्त धर्ममें मुझे क्या भलाई दीख पड़ी इसके लिये पृथक् व्याख्यानकी आवश्यकता है। यहां पर केवल इतना ही कह देना उचित समझता हूं कि वेदोक्त धर्म कुरानी खुदा और शैतानके झगड़े, बाबा आदम और हव्वा (आदमकी स्त्री) की कहानी, घिनौने बहिश्त और डरावने दोजख तोबाह, इस तग़फ्फार शफ़अत, हश्र नश्र हिसाब किताब तराजू पलड़ा फरिश्ते जिन्न मांसाहार पशु वध, पत्थरोंके चूमने, मकानोंके चारो ओर घूमने, दिन ही में भूखे रहने रातका नियम विरुद्ध खाने, खुदाकी इबादत (पूजा) में टांग हाथ पांव हिलाने उठने बैठने, स्त्रियों पर बलात्कार करने मिथ्या बातोंको न मानने वाले पर उच्च जीवन व्यतीत करने वालोंको काफिर कहने, उनसे घृणा करने, लड़ने भिड़ने लूटने खसोटने बन्दी करने खुदाके साथ किसी दूसरेको शरीक करने आदि २ सब मिथ्या बातों से रहित है। कदाचित कोई मनुष्य यहां पर पुनरजन्म और नियोगके सिद्धान्तको पेश कर दे। मैं पुनरजन्मको न्यायका मूल और नियोगको व्यभिचार के निर्मूल करने हारा समझता हूं। यदि पुरुष और स्त्री पूर्ण

ब्रह्मचर्यके स्टेजके भीतरसे होकर अपने आपको नियोगका अधिकारी बना सकें तो संसारमें से व्यभिचार अपने घृणित और भयानक परिणाम सहित लोप हो जावे। निःसन्देह नियोग उस समयका स्मारक है जब कि स्त्रीको खेती, गुलाम, संपत्ति समझने के स्थान में अर्धाङ्गी समझा जाता था और जब स्त्री और पुरुष का परस्पर सम्बन्ध करना विशेष भोगकी तृप्ति के लिये नहीं छूटता था। परन्तु शोक है! मनुष्य जितना विषय भोगका वशीभूत होता गया, स्त्री जातिके अधिकार न्यून होते गये। यहां तक कि आज कल उसकी प्रतिष्ठा बहुधा मनुष्यों में एक गाय, भैंस, भेड़ी बकरी के समान रहगई, कि जिसको जब चाहा अपने घर से निकाल बाहर फेंक दिया और दूसरी गाय लेली। ऐसे लोगोंके सम्मुख यदि हम विषय भोगकी अन्धेरियोंसे पड़ी हुई मिट्टी के सब पर्त हटाकर स्त्री और पुरुष के परस्पर के सम्बन्ध उस के निमित्त कारण को स्पष्टरूप से वर्णन करके नियोग विषय दिखावें भी तो सब चिल्ला उठेंगे व्यभिचार! व्यभिचार!! निःसन्देह वह देश और वह जाति और उस देश और उस जातिके वह पुरुष और वह स्त्रियां जो ब्रह्मचर्य का नाम भी न जानती हों और जिनके लिये वर्षों तक पूर्ण ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी रहकर विद्योपार्जन करते हुये सब विषय भोग छोड़ इन्द्रियों को वश में करना और फिर उसके पश्चात् केवल वंश रक्षाके लिये परस्पर विशेष सम्बन्ध करना असंभव होगया हो, वह यदि नियोग को व्यभीचार कहें तो ठीक है और वे विवश हैं पर मैं इस से यह परिणाम नहीं निकाल सकता कि इस विषय में किसी सोसाइटी की पतित दशा होने के कारण नियोग के सिद्धान्त

विरजा
तर्कइस्लाम में पु 5340
ग्रहण क्रमांक

(पर अमल) का प्रचार नहीं हो सकता, तो वह सिद्धान्त ही अ-शुद्ध हुआ। नहीं, सोसाइटी किसी उच्च वा पवित्र सिद्धान्त को निर्बलता वा मूर्खता के कारण भुला सकती है, पर समय आने पर विशेष साधनों के उत्पन्न होजाने से जब वह निर्बलता और मूर्खता दूर हो जाती है तो वह सिद्धान्त ऐसेही प्रकाश से दीप्ति-मान् होने लग जाता है, जैसा आर्यावर्त्त की लाखों वर्षों से पत्थरों के नीचे छिपी हुई यथार्थ ईश्वरीय विद्याका सूर्य कि जिसको बालब्रह्मचारी स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी ने स्वार्थी लोगोंके हाथों में बन्द वेदों के भीतर से ऐसी शोभा के साथ प्रकट कर दिया कि जिसकी किरणोंसे आर्यावर्त्त निवासी ही नहीं चौंधिया गये, वरन् सहस्रों मीलके अन्तर पर अमेरिकामें बैठा हुआ एण्ड्रो जेक्सन भी चकित हो गया। इस कारण जिस प्रकाशसे पत्थर २ दीखने लगे और जिस प्रकाश को पाकर सहस्रों मनुष्य मुंह से हड्डियों को गिरा कर क्रूरता से निकल आये, उसी प्रकाश ने नियोग के सिद्धान्त का भी प्रकाश किया, कि जिसके लिये आज कल चारों ओर से कतिपय हिन्दू मुसलमान, सिक्ख, भाई वह शब्द नियत कर रहे हैं, जो मेरे विचार में आज कल के कुछ निकाह वा विवाह पर घटना उचित हैं क्योंकि वह पुरुष और वह स्त्री जो पूर्ण ब्रह्मचारी न रहकर इन्द्रियों को दमन नहीं कर सकते वे निकाह वा विवाह तो वर्त्तमान प्रथानुसार निःसंदेह कर सकते हैं, पर नियोग नहीं कर सकते यदि करें तो महान् पाप के भागी होंगे। क्योंकि नियोग वह पवित्र सिद्धान्त है कि जिस के नियमों का पालन करना साधारण मनुष्य का काम नहीं है।

अन्त में मेरी अन्तःकरण से प्रार्थना है कि पक्षपात और हठ-धर्मी के पर्दों को चीरकर तहकीकात (सत्य निर्णय करने का विचार) का स्वाभाव सबमें उत्पन्न हो जो बुरे सिद्धान्त हैं उनको छोड़ने और जो अत्युत्तम सिद्धान्त हैं, उनको स्वीकार करनेकी सामर्थ्य मेरे अन्य हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई भाइयोंको भी प्राप्त हो । तथास्तु ॥

(नोट) इन सूचनाओंके अतिरिक्त जो कि समीक्षाओंके साथ दी गई हैं अन्य भी कितनेही स्थानोमें इन विषयोंके कुरान में वृत्तान्त हैं, जो विस्तारके भयसे छोड़ दिये गये हैं ।

॥ समाप्तम् ॥

चारों मूल वेद व वेद-भाष्य तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत, पं० तुलसीराम स्वामी कृत, स्वामी दर्शनानन्द कृत, सार्वदेशिक सभा देहली, कन्या महाविद्यालय जालन्धर, म० राजपाल सरस्वती आश्रम लाहोर, म० चिम्मनभद्रगुप्त वैश्य, द्वारका प्रसाद अत्तार, श्यामलाल वर्मा तथा पं० शिवशर्मा आर्यसाहित्य मण्डल अजमेर तथा भारतके अन्य मुख्य २ पुस्तकालयोंकी चुनी हुई पुस्तकें यहां मिलती हैं ।

पता—

मैनेजर—वैदिक पुस्तकालय
८।१ रामकुमार रक्षित लेन, कलकत्ता ।